चन्दामामा
सितम्बर १९९३
Rs
4

चन्दामामा

सितम्बर १९९३

*

अगले पृष्ठों पर

*

एक प्रति : ४ रुपये

वार्षिक चन्दा : ४८ रुपये

एको से बनाइए सुंदर मुखौटे!
एको स्केच से रंगबिरंगे मुखौटे न केवल बनाना आसान... बल्कि ये है मौज-मस्ती का सामान!
एको – अनेक सुंदर रंगों में १२, २४ और ३० के पैक में उपलब्ध,
और एको की सबसे बड़ी खूबी, ये हैं वॉटर-बेस रंग और अविषैले भी यानी
इनका इस्तेमाल भी नन्हें-मुन्नों के लिए पूरी तरह सुरक्षित है!
और फिर जब मम्मी देखेंगी आपका कमाल... तो खुशी से होगा बुरा हाल!
हजारों इनाम जीतो!
एको 'फन-विथ-कलर्स' प्रतियोगिता में हिस्सा लीजिए! प्रवेश-पत्र हर पैक के साथ उपलब्ध है।
मुफ्त! कलरिंग बुक हर पैक के साथ!
Ekco
एको – मौजमस्ती का बेहिसाब हंगामा! आपकी कला की सुंदर अभिव्यक्ति.
Karishma/SW/6/2016 HLB

मस्त मसालों की भरमार

लिज्जत पापड हो हरबार...

लिज्जत

पापड

स्वादिष्ट कुरकुरी स्वादों में

उडद, उडद स्पेश्यल, मुंग, पंजाबी स्पेश्यल लहसुन, मिर्च

श्री महिला गृह उद्योग लिज्जत पापड

चन्दामामा

संस्थापक : 'चक्रपाणी'

संचालक : नागिरेड्डी

बच्चे स्कूल क्यों टालते हैं?

यह बात सच है कि भारत में प्राथमिक शिक्षा निःशुल्क कर दी गयी है, फिर भी अत्यधिक राज्यों में विद्यार्थी घटते जा रहे हैं । वे अपनी शिक्षा की पूर्ति के पहले ही पाठशालाएँ छोड़ रहे हैं । सरकार उनके इस रवैय्ये पर बहुत ही चिंतित हैं । कुछ राज्यों ने जैसे तमिलनाडु और महाराष्ट्र ने इसकी गहराई में जाकर छान-बीन करनी चाही कि क्यों बच्चे स्कूलों को टालना चाहते हैं?

अभी हाल ही में तमिलनाडु में किये गये एक सर्वेक्षण से मालूम हुआ कि चौथे दर्जे तक पहुँचने के पहले ही २५ प्रतिशत बच्चे स्कूल से निकाल लिये जाते हैं । निकाल लिये गये इन बच्चों को परिवार की आमदनी को बढ़ाने के काम पर लगाया जाता है । एक और पच्चीस प्रतिशत बच्चे घर के काम-काजों में हाथ बंटाने के लिए स्कूलों में जाने से रोके जाते हैं । वे बच्चे अपने घरों में अपनी नवजात बहन या भाई की देखभाल में लग जाते हैं । अथवा उनको पशु-पालन या मुर्गीपालन के कामों में लगाया जाता है । यह सब आर्थिक परिस्थितियों की वजह से होता है और सरकार इस दिशा में कुछ करने में अपने को असहाय महसूस करती है । महाराष्ट्र में इस विषय को लेकर जो सर्वेक्षण हुआ, वह दूसरे ही प्रकार का निकला । उसके अनुसार, बच्चों का ध्यान स्कूलों की ओर आकर्षित होने के लिए स्कूलों में कोई खास बात है नही, जिससे वे नियमित रुप से स्कूल में पठन के लिए आयें । इस सर्वेक्षण से यह भी मालूम हुआ कि अध्यापन की पद्धति में त्रुटियाँ हैं और बच्चे पाठों को समझने में अशक्ति महसूस कर रहे हैं । इसका बहुत हद तक कारण पाठ्य पुस्तक हैं ।

इन पाठ्य पुस्तकों को लेकर दिल्ली में जो सर्वेक्षण हुआ, उसका सारांश यों निकला । जो बच्चे शिशु-पाठशालाओं में जाते हैं, उन्हें औसतन् सात पाठ्य पुस्तकें दी जाती हैं । उनसे थोड़ी अधिक उम्रवाले विद्यार्थियों को कम से कम दस पुस्तकों के विषयों का अध्ययन करना पड़ता है । माँ-बाप हर साल इन पुस्तकों तथा अनगिनत नोट-बुकों पर होनेवाले खर्च पर बहुत ही परेशान हैं । माने-जाने, सुप्रसिद्ध कितने ही शिक्षा- शास्त्रज्ञों ने बच्चों पर किये जानेवाले इस अन्याय का विरोध बारंबार किया है और कर रहे हैं । परीक्षाओं व डिग्रियों की समाप्ति की माँग बराबर की जा रही है, लेकिन इससे पहले यह आवश्यक है कि शिक्षा की वर्तमान पद्धति में संपूर्ण परिवर्तन लायें, जिससे बच्चे स्कूल से भागने का प्रयास छोड़ दें ।

वर्ष : ४६ | सितम्बर १९९३ | अंक : १

एक प्रति : रु. ४/- | वार्षिक चन्दा : रु. ४८/-

क़दम-क़दम पर 'बुराई' का खतरा... आपके साथ है 'नेकी' की शक्ति. 'ग्रेस्कल' किला है मंज़िल और तय करना है—इटर्निया का दुश्वार रास्ता. आइए, 'मास्टर्स ऑफ़ द यूनिवर्स' के साथ क़दम मिलाइए. बस, एक पाँसा हो, एक साथी हो तो इस रोमांचक खेल का मज़ा आए.

1	2 ऑरको जादुई जादूगर का चमत्कार— पहुँचो 19 पर.	3	4 पैंथर स्केलेटर का खूंखार जानवर हमला करे. 1 से फिर शुरू हो सफ़र.	5
6 प्रिंस एडम खतरनाक खींच से बचाए, 11 पर पहुँचाए.	7	8	9	10 बुराई का प्रकोप 5 में खींच ले जाए.
11	12 बैटलकैट ही-मैन की कमाल की सवारी, 25 पर ले जाए.	13	14 मेगा लेसर जगमगाहट राह दिखाए, 22 पर पहुँचाए.	15
16	17	18 स्केलेटर बुराई का स्वामी राह रोके... 5 पे फेंके.	19	20
21	22	23	24 ही-मैन शक्ति शानदार... पहुँचाए 30 पर.	25
26 बीस्ट मैन बुराई का साथी राह का रोड़ा बन जाए, 21 पर लौटाए.	27	28	29	30

बधाई हो!

अब आपके पास है शक्ति.

उमंग भरे खिलौनों का संसार

HTA-1188-94

दो महिला प्रधान मंत्री

अभी हाल ही में दो देशों ने दो महिलाओं को अपने अपने देशों का प्रधान मंत्री चुना है। जून १४ को, श्रीमती टानुसू सिल्लर टर्की की प्रथम महिला प्रधान मंत्री पद पर आसीन हुई हैं। इसके बारह दिनों के बाद किम कांबेल केनाडा की २९ वे प्रधान मंत्री निर्वाचित हुई हैं। ये केनाडा की प्रथम महिला प्रधान मंत्री हैं।

अप्रैल महीने में टर्की के अध्यक्ष टर्गट ओजाल अकस्मात दिवंगत हो गये, जिसके कारण प्रधान मंत्री सुलेमान डेमेटेल, टर्की के अध्यक्ष बने। इस बजह से सत्तारूढ़ "ट्रू पाथ पार्टी' को नये प्रधान मंत्री का चुनाव करना पड़ा। उस समय ४७ वर्ष की श्रीमती सिल्लर वर्तमान मंत्रिमंडल में मंत्री थीं। वे प्रधान मंत्री पद के लिए चुनाव लड़ीं। ६५ वर्ष के 'इंटीरियर' मंत्री इस्मत सेस्टिन उनके प्रतिद्वंदी थे। उन्हें ३२० मत मत प्राप्त हुए तो सिल्लर को ५७४ मत मिले। सेस्टिन को ४० साल का राजनैतिक अनुभव था तो सिल्लर को केवल तीन साल का। ऐसे अनुभवी व्यक्ति को चुनाव में हराना सिल्लर की विशिष्टता ही कही जानी चाहिये।

बास्फरस विश्वविद्यालय में श्रीमती सिल्लर अर्थ-शस्त्र में स्नातक बनीं। इसके बाद अमीरीका के येल विश्व विद्यालय में उच्च शिक्षा प्राप्त की। फिर टर्की के विभिन्न विश्वविद्यालयों में१९७८ से सहयोगी प्रोफेसर रहीं। १९८३ से वे प्रोफेसर बनीं। १९९० में 'ट्रू पाथ पार्टी' में शामिल हुईं। १९९१ में डेनिरिल के मंत्रिमंडल में वित्त शाखा की मंत्री बनीं। मंत्री बनने के २० महीनों के अंदर ही टर्की के व्यापार-क्षेत्र में मौलिक सुधार ले आयीं और सट्टे बाज़ार की कार्यरीति में प्रगति लाने का भरसक प्रयत्न किया। देश के युवक-युवतियों और स्त्रीयों के कल्याणकारी कार्यो में भी उन्होने पर्याप्ति अभिरुचि दिखायी और इस दिशा में ठोस काम किया।

टर्की के संसद के शासन चलानेवाले दल में पुरुषों की ही संख्या अधिक है। पचास साल से भी अधिक उम्रवाले अधिक सदस्य इसमें हैं। ऐसे सदस्यों का, अपने से भी कम उम्र की एक महिला को प्रधान मंत्री चुनना अवश्य ही महत्वपूर्ण विषय है। सत्ता बूढ़ों से जवानों के हाथों में आयी। यह परिवर्तन टर्की की राजनीति में एक अभूतपूर्व घटना है, ऐसे राजनीति के विशेषज्ञों का कथन है। अत! इसमें कोई आश्चर्य नहीं, अगर सिल्लर देश की रूप-रेखाओं में आमूल परिवर्तन लाने का प्रयत्न भी करें।

यह कहना होगा कि के केनेडा को भी एक युव प्रधान ही मिली हैं। क्योंकि किम कांबेल की उम्र ४६ ही है। पहले पहल उन्होने वांकोवर में वकालत का पेशा निभाया। इसके बाद वे सत्तारूढ़ 'प्रोग्रसिव कन्सरवेटिव

पार्टी' में प्रवेश किया। एक के बाद एक पद से अग्रसर होती हुईं आखिर इस उच्च पद पर आसीन हुईं।

प्रधान मंत्री ब्रियान मलरोनी ने अपने मंत्रिमंडल में पहले पहल उसे न्याय और उसके बाद सुरक्षा शाखाएँ सौंपीं।

देश में व्यापार की गतिविधियाँ मंद पड गयीं। देश का ऋण-भार अधिक हो गया। व्यापारिक संस्थाएँ बंद होने लगीं। इस वजह से बेरोज़गारी की समस्या ने बडा ही विषम रूप लिया। इन कारणों से देश की आर्थिक स्थिति छिन्नाभिन्न हो गयी। इस दौरान जनता के अभिप्राय जाने गये। सरकार ने जनता के सामने संविधान में परिवर्तन लाने के लिए कुछ प्रस्ताव रखे, जिसे उन्होने अस्वीकार कर दिया। फलस्वरूप मलरोनी ने प्रधान मंत्री पद से इश्तीफ़ा देने का निर्णय किया। इस स्थिति में सत्तारूढ़ दल को नये प्रधान मंत्री को चुनना अवश्यंभावी हो गया।

जून १३ को जो चुनाव संपन्न हुआ, उसमें मिस कांबेल को ५३ प्रतिशत मत मिले तो उनके मुख्य प्रतिद्वंदी पर्यावरण शाखा के मंत्री जीन चारेस्ट को ४७ प्रतिशत मत प्राप्त हुए। द्वितीय गणना में एक और उम्मीदवार जिम एड्वडर्स ने कांबेल को अपना सहयोग दिया, जिससे वे बड़ी आसानी से जीत गयीं।

केनाडा, ब्रिटिश की संसदीय पद्धति का ही अनुकरण करता है। आनेवाले नवंबर में यहाँ आम चुनाव होनेवाले हैं। तब अगर 'कन्सरवेटिव' पार्टी चुनाव में जीत जायेगी तो नि त्संदेह ही कांबेल प्रधान मंत्री बनेंगी।

दस सालों के पहले पीरी ट्रूडू जब से प्रधान मंत्री पद से हट गये, तब से 'लिबरल पार्टी' विपक्ष पार्टी ही बनी रही।

यह कहकर मज़ाक किया जाता था कि अमरीका के युवक क्लिंटन के अध्यक्ष चनने से केनाडा की जनता उसके प्रति ईर्ष्यालू हो गयी। राजनीति के विशेषज्ञों का कहना है कि केनाडा की प्रजा सत्ता को युवाओं के हाथों में सौंपना चाहती है। इसी कारण से कांबेल अपने प्रयत्न में सफल रही। वह भी करीबन क्लिंटन की उम्र की ही है। गिटार बजाती हैं, शतरंज खेलती हैं, रूसी साहित्य से उन्हें अत्यधिक लगाव है। कह सकते है कि नवंबर में जो चुनाव होंगे, उसमें अवश्य ही वह अपने पद को सुस्थिर रख सकेंगी।

महिला प्रधान मंत्री

श्रीमती गोल्डा मेयर-इज़राइल, श्रीमती इंदिरा गांधी-भारत, श्रीमती सिरिमावो बंडारनायके-श्रीलंका, श्रीमती मार्गरेट थाचर-इंग्लैंड, श्रीमती बेनज़ीर भुट्टो-पाकिस्तान, श्रीमती बेगम खलीदा ज़िया-बंगला देश

दादी की पते की बात

कृष्णवेणी एक साधारण किसान परिवार की थी। अपनी बेटी की शादी की समस्या उसके लिए सर-दर्द बन गयी। सास ने सुझाया था कि उसका नाम अप्सरा रखो, क्योंकि यह लड़की देखने में अप्सरा ही है। उसने सास के कहे मुताबिक उसका नाम रखा अप्सरा। अप्सरा एक साल की भी नहीं थी, तब कोई घातक बीमारी की वजह से उसका बाप गुज़र गया था। कृष्णवेणी ने नाना प्रकार के कष्ट सहे और किसी तरह उसे पाल-पोसकर बड़ा किया।

बिचारी अभागिन अप्सरा उम्र में बड़ी हो गयी, किन्तु बुद्धि में नहीं। शादी की उम्र की हो गयी, लेकिन अब भी गलियों में छोटे बच्चों के साथ खेलती-कूदती।

एक दिन गली में खेलती हुई अप्सरा ने, प्यास के मारे पानी के लिए सामनेवाले के घर का दरवाज़ा खटखटाया। घरवाली ने दरवाज़ा खोला और डाँटती हुई बोली "अपने घर जाकर पानी नहीं पी सकती हो? तुम भी कैसी लड़की हो? इतनी बड़ी होकर गली के बीच खेलती रहती हो? तुमसे शादी कौन करेगा?" फिर एक लोटे में उसे पानी दिया।

घरवाली के इस मज़ाक पर अप्सरा बहुत नाराज़ हुई और पानी पिये बिना लोटा नीचे फेंककर रोती हुई घर आयी। दादी ने जो कुछ भी हुआ, सुना तो कहा "रोओ नहीं, बेटी। तुम्हारी शादी नहीं होगी, ऐसे बकवास की परवाह मत करो। जैसा नाम है, वैसा ही तुम्हारा रूप है। तुम तो आकाश से टपकी अप्सरा जैसी सुँदरी हो। सुनना, तुम्हारी शादी कोई ऐरे-ग़ैरे से नहीं: बल्कि किसी राजकुमार से होगी, जो तुम्हें ढूँढ़ता आयेगा।" दादी ने उसके आँसू पोंछते हुए उससे बड़े प्यार से ये बातें कही।

सरन तेजा

उस दिन से अप्सरा ने छोटी लड़कियों के साथ खेलना बंद कर दिया। एक दिन रात को कृष्णवेणी पानी पीने के लिए उठी तो उसने देखा कि उसकी बेटी अप्सरा खिड़की के पास बैठकर अंधेरे में किसी की बाट जोह रही है। बेटी को इस हालत में देखकर वह अवाक् रह गयी। फिर अपने को संभालते हुए उसने बेटी से कहा "अरी, वहाँ क्यों बैठी हो? क्या नींद नहीं आती?"

"अगर मैं सो जाऊँ तो मेरे लिए ढूँढ़ते हुए राजकुमार को हमारे घर का पता कैसे मालूम होगा? तब वह चला जायेगा ना? इसीलिए उसी की प्रतीक्षा में यहाँ बैठी हूँ" अप्सरा ने कहा।

कृष्णवेणी को अपनी सास पर बड़ी नाराज़ी आयी। क्योंकि उसी की वजह से पगली अप्सरा इस प्रकार के स्वप्न-लोक में विचरती रहती है। वह अपनी सास की खाट के पास गयी और बोली "देख लिया, आपकी बातों का नतीजा!" उसने उसे जगाने के लिए उसके बदन पर हाथ रखा।

सास के बदन को छूते ही उसे लगा कि वह बदन बरफ़ का टुकड़ा है। उसने जान लिया कि उसके मरे बहुत देर हो गयी। बूढ़ी सास उसका सहारा थी। उसकी मौत ने और कृष्णवेणी पर सवार राजकुमार के पागलपन ने उसे और भी दुखी कर दिया। वह गहरी सोच में पड़ गयी कि राजकुमार का यह पागलपन अप्सरा से कब छूटेगा?

सास के मरने के दो महीने बाद वह कृष्णवेणी की शादी की तैयारियों में लग गयी। गाँव में रहनेवाला कोई भी अप्सरा से शादी करने तैयार नहीं था। एक मध्यस्थ के द्वारा पड़ोस के गाँव से एक रिश्ता आया। लड़का देखने में बिलकुल ही बदसूरत था। लडकी पगली हो तो क्या? लड़के की शादी किसी भी तरह की लड़की से हो जाए तो यही बहुत था, लडके के माता-पिता को। इसलिए वे अप्सरा को देखने आये।

जब दुलहा-दुलहन की देखा-देखी हो रही थी, तो अप्सरा ने दुलहे से पूछा "बताओ, तुम किस देश के राजकुमार हो?"

लड़का इस सवाल का जवाब दे, इसके पहले ही लडकी की माँ ने दख़ल देते हुए कहा "मेरा बंटा खेत में काम करता है।"

"कीचड़ में रहनेवाले से मेरी शादी? गोबर रौंदने वाले से मेरा विवाह? छी, छी, यह तो असंभव है । मेरे लिए तो राजकुमार आयेगा?", कहती हुई नाराज़ी से अप्सरा अंदर चली गयी ।

"पगली, और वह भी इतनी बड़ी पगली," कहते हुए वे नाराज़ होते हुए दुलहे को लेकर वहाँ से चले गये ।

चार दिनों के बाद आधी रात को, कृष्णवेणी ने देखा, अप्सरा राजकुमार की प्रतीक्षा में खिड़की के पास बैठी ऊँघ रही है । घर के पिछवाड़े में इमली का जो पेड़ है, उसके नीचे बैठकर कृष्णवेणी अपनी सास पर झल्लाती हुई, गाली देती हुई बोलती रही "मुझे मालूम नहीं कि तुम स्वर्ग में हो या नरक में । लेकिन मेरी बेटी की जिन्दगी को नरक बनाकर चली गयी हो । तुम्हारी बेमतलब की बातों ने मुझे और मेरी बेटी को परेशानी में डाल दिया है । अब मेरी बेटी की ज़िन्दगी बरबाद होने जा रही है ।"

एक पिशाच अपनी थकान को दूर करने के लिए इमली के पेड़ की शाखाओं में विश्राम कर रहा था । कृष्णवेणी की गालियों की बौछार से वह जागा और कहा "ठहर जाओ दीदी। मरनेवालों को, खासकर, अपनी सास को इस तरह गालियाँ देते जाना तुम्हें क्या शोभा देता है?" कहता हुआ वह पिशाच कृष्णवेणी के सामने कूद पड़ा ।

पिशाच को देखते ही कृष्णवेणी के होश-हवास उड़ गये, पर उसने दीदी कहकर

जो पुकारा, उसे स्मरण करते हुए उसने अपना साहस बटोरा और बोली "क्या करूँ भैय्या । अपना यह दुख किसी दूसरे से बताने लायक नहीं है ना?" साथ ही अपना सारा दुखड़ा पिशाच को सुनाया । सब सुनने के बाद पिशाच कुछ देर तक सोचता रहा और दुख-भरे स्वर में कहा "दीदी, दुनिया उल्टी-सीधी हो गयी है, नहीं तो अप्सरा जैसी सुँदरी से मैं ही शादी करता । तुम निश्चिंत रहो। कल आधी रात को आकर राजकुमार का भूत उसके सर से उतार दूँगा । उसका यह पागलपन ठिकाने लगा दूँगा ।" कहकर वह वहाँ से चला गया ।

दूसरे दिन आधी रात को पिशाच सफ़ेद घोड़े पर बैठे राजकुमार के वेष में आया ।

खिड़की के पास बैठी अप्सरा उसे देखकर फूले ना समायी । तालियाँ बजाती हुई बोली "क्या दादी की बात खाली जायेगी? नहीं, कभी नहीं । राजकुमार, यही मेरा घर है, अंदर आओ ।"

पिशाच ने कहा "आकाश को छूनेवाली अट्टालिकाओं में रहनेवाला मैं, भला तुम्हारी इस टूटी-फूटी झोंपड़ी में कैसे आऊँ? हवा तो अंदर चलती ही नहीं । इसलिए बाहर आओ, इस चाँदनी में थोड़ी देर सैर करेंगे ।"

अप्सरा बिना कुछ बोले पिशाच के सफ़ेद घोड़े पर बैठ गयी । पिशाच उसे जंगल में बहुत दूर तक ले गया । थोड़ी देर बाद अप्सरा ने कहा "राजकुमार, इस जंगल में मुझे ड़र लग रहा है । कुछ तो बोलो ।"

"बोलने के लिए रखा ही क्या है" कहते हुए पिशाच अपना सर खरोचने ही वाला था कि उसे याद आ गया कि यह राजकुमार का लक्षण नहीं है, तो अपने को संभाल लिया । कहा "हाँ, एक छोटी-सी बात है । ही अपने भाई को मारने के लिए विष का प्रयोग करवाया है ।"

'क्यों?' अप्सरा ने पूछा ।

पिशाच ठठाकर हँसता हुआ बोला "मेरा भाई जीवित रहेगा तो भला मैं सिंहासन पर कैसे बैठ पाऊँगा"?

"अच्छा! परंतु ऐसा करना क्या पाप नहीं?" अप्सरा ने पूछा ।

"पाप-पुण्य राजकुमार के पास आ नहीं टपकते । दो तीन दिनों में अपने बूढ़े पिता को स्वर्ग भेज दूँगा । एक महीने के अंदर राजा बनकर, अपनी शक्तिशाली सेना को लेकर पड़ोस के राज्य पर आक्रमण कर दूँगा और उस राज्य पर अपना आधिपत्य जमा लूँगा । उस राज्य की राजकुमारी को हस्तगत कर लूँगा" कहता हुआ वह ज़ोर-ज़ोर से हँसने लगा ।

राज-सिंहासन पर आसीन होने की इच्छा रखनेवाले किसी भी पाप से नहीं ड़रते, वे किसी बी प्रकार का अत्याचार व अन्याय करने से पीछा नहीं हटते, सुँदर व आकर्षक दिखनेवाले राजकुमारों का मन मानव का नहीं, राक्षस का होता है, यही अप्सरा को बताने का उसका उद्देश्य था । वह चाहता था कि अप्सरा के हृदय में राजकुमारों के

प्रति घृणा और द्वेष उत्पन्न हो जाएँ ।

एक क्षण के बाद पिशाच ने अचानक अप्सरा को घोड़े से उतारा और कहा "मुझे तीसरे पहर में सेनाधिपति से रहस्य-चर्चा करनी है । अब चलता हूँ ।"

अप्सरा एकदम घबड़ा गयी और बोली "आधी रात को एक लड़की को अकेली छोड़कर चले जाओगे? कोई बाघ या शेर खा जाए तो?"

"खाये तो खा ले । मैं राजकुमार हूँ । अगर मैं चाहूँ तो हज़ारों सुँदरियाँ मेरे किले के दरवाज़े के सामने क़तार में खड़ी हो जाएँगी ।" यों उसका मज़ाक उड़ाता हुआ घोड़े को दौड़ाता हुआ, पिशाच वहाँ से चला गया ।

अप्सरा ज़ोर-ज़ोर से रोती हुई वहाँ बैठ गयी । इतने में एक युवक घोड़े पर बैठा हुआ वहाँ आया और बोला "इस आधी रात के समय कौन है यहाँ, जो इस घने जंगल में अकेली बैठी रो रही है?" "मैं अप्सरा हूँ" अप्सरा ने कहा ।

उसकी बात सुनकर युवक घोड़े से धड़ाम से नीचे कूदा और हर्षित हो बोला " वाह, मैं भी कितना भाग्यवान हूँ । डेढ़ साल से जिसका अन्वेषण मैं कर रहा था, उसका फल मुझे आज इस जंगल में मिला है । घोड़े पर चढ़ो । कल ही हमारा विवाह संपन्न होगा" ।

अप्सरा बड़े आनंद से घोड़े पर चढ़ बैठी । दूसरे दिन सबेरे जब कृष्णवेणी बड़ी बैचैनी से अप्सरा की राह देख रही थी, तब सैनिक एक पालकी के साथ वहाँ आये और उसे उस पालकी में बिठाकर राजप्रासाद ले गये । स्वयं रानी ने आकर उसका स्वगत किया और कहा "आइये भाभीजी, शादी की तैयारियों में व्यस्त थी, इसलिए स्वयं आपके घर नहीं आ सकी । क्षमा कीजिये ।" कहती हुई उसने उसके हाथ पकड़ लिये । यह सब कुछ जो हो रहा था, कृष्णवेणी को लगा, सपना है । रानी ने उसके मन की बात को ताड़ लिया और कहा "भाभीजी, यह सब कुछ आपको सपना लगता होगा, इसलिए यह मेरी जिम्मेदारी है कि मैं आपको सच-सच बता दूँ" । और उसने यों कहा ।
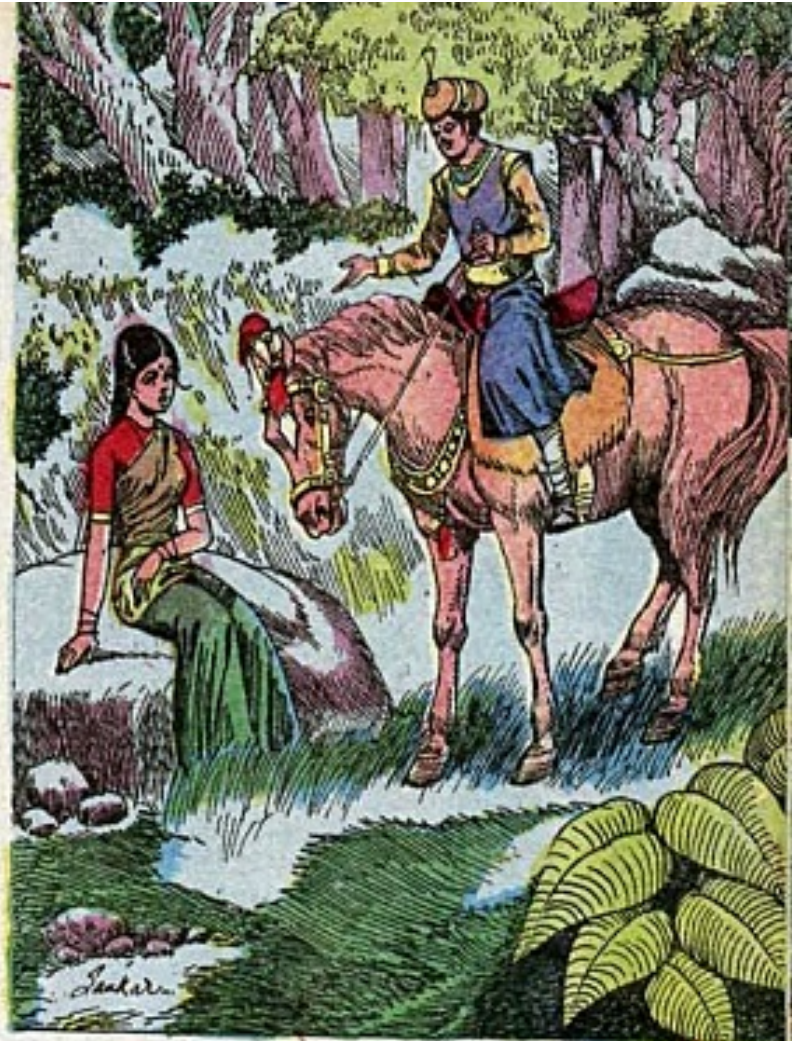
"मेरा बड़ा लड़का बिजय पागल-सा है । दूसरा लड़का जय बहुत ही तेज़ है । एक

बार दोनों भाई नगर गये । वहाँ के लोगों ने विजय का हुलिया देखकर कहा "तुम किसी राजकुमारी से शादी नहीं करोगे । अंतःपुर की किसी दासी से तुम्हारी शादी हो जायेगी" यों उन लोगों ने विजय का मज़ाक उड़ाया ।

यह सुनकर विजय की आँखों में आँसू आ गये । उसे रोते देखकर मेरी सास ने बड़े लाड़-प्यार से उससे कहा "चिंता मत करो । सब राजकुमार मामूली राजकुमारियों से ही शादी करेंगे, परंतु तुम्हारी शादी होगी अप्सरा से । तुम्हारी शादी होकर रहेगी अप्सरा से ।"

उस दिन से मेरा बेटा अप्सरा की खोज में है । जिस किसी भी राजकुमारी के चित्र को देखे, वह यह कहकर उसका तिरस्कार कर देता है कि यह अप्सरा हो ही नहीं सकती । अभी हाल ही में उसका यह हठ ज़ोर पकड़ता गया कि मैं स्वयं अप्सरा को खोज निकालूँगा । घोड़े पर बैठकर रात-दिन राज्य के कोने-कोने में उसके लिए ढूँढ़ रहा है । यह उसका भाग्य है कि आपकी लड़की उसकी नज़र में पड़ी । क्षण भर में दोनों ने एक दूसरे को पसंद कर लिया । जल्दी ही उनकी शादी करा देंगे । उनपर तो कोई जिम्मेदारियाँ हैं भी नहीं । खाना खायेंगे और बग़ीचों में घूम-फिरकर लौटेंगे । उनके जीवन में आनंद ही आनंद होगा ।"

रानी की बातें सुनकर कृष्णवेणी ने बड़े आनंद से कहा "भाभीजी, हम चुप नहीं बैठ सकतीं, इसलिए कोशिशें करती ही रहती हैं । पर आप ही कहिये, ब्रह्मा के लिखे को कौन टाल सकता है? यहाँ ब्रह्मा की लेखा के साथ-साथ उसकी दादी माँ की पते की बात ने भी चमत्कार कर दिया है ।"

"हाँ, आपने बिलकुल ठीक ही कहा होगा, इसीलिए तो यह सब संभव हो पाया है ।" रानी हँसती हुई बोली ।
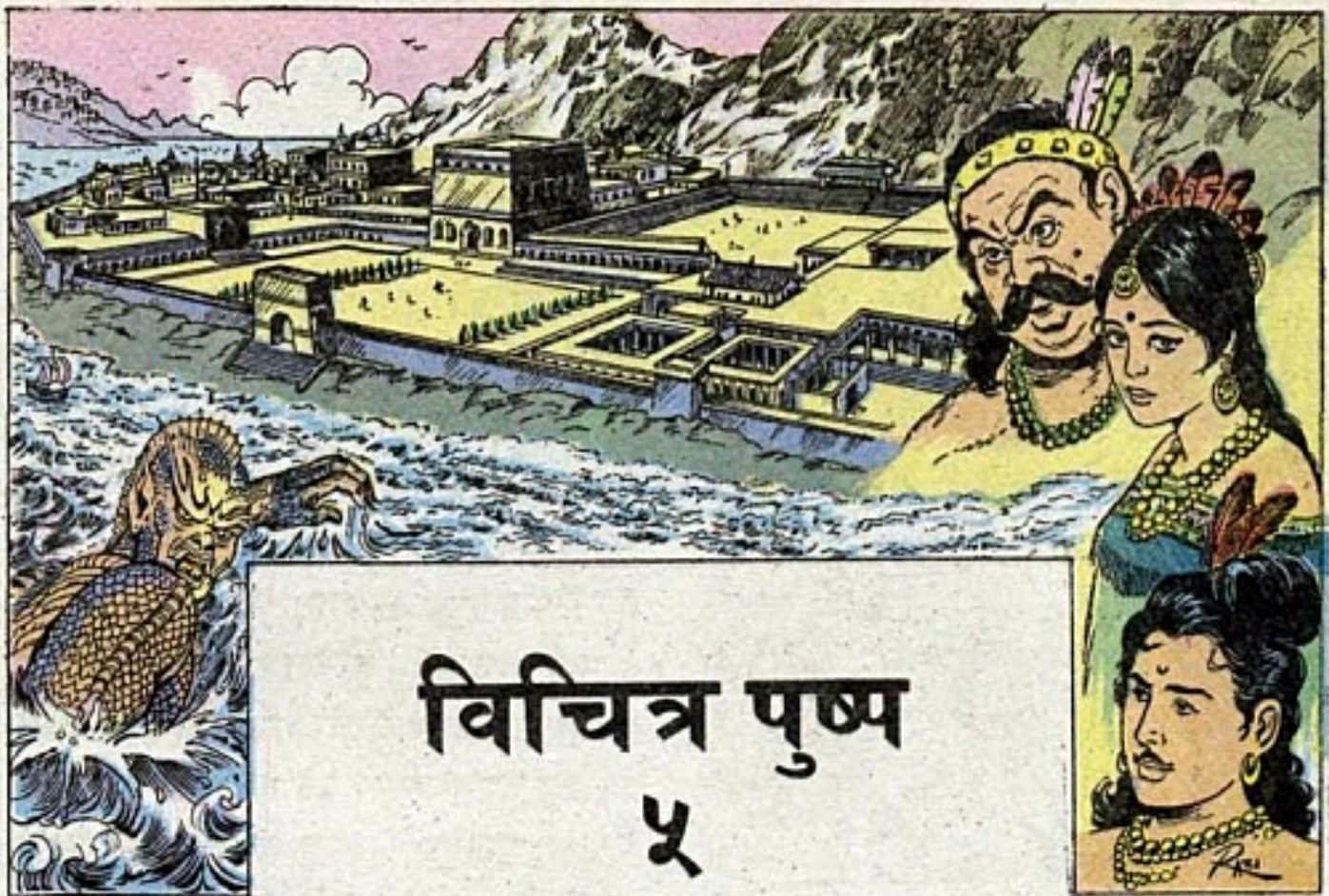
विचित्र पुष्प
५

सेनाधिपति गंभीरसिंह दक्षिणी समुद्री तट पर गया और वहाँ उसने राक्षस जंतु को देखा । आँखों देखा पूरा विवरण उसने राजा को सविस्तार सुनाया । राजगुरु ने राजा को बताया कि राज्य की उत्तरी दिशा में विकसित 'शताब्दिका' पुष्प ही उस राक्षस जंतु को भूमि की और आकर्षित कर रहे हैं । यह सुनकर राजा ने निर्णय किया कि वे श्रृंग्माय पर्वतों पर स्वयं जायेंगे और उत्तुंग जाति के युवकों से मदद माँगेंगे ।—बाद

सैनिकों ने राजा प्रतापवर्मा के आगमन का समाचार, जब उत्तुंग जाति के प्रधान शंभु को सुनाया तो वह खुशी से फूल उठा । तक्षण ही उसने मुनादी पिटवायी, घर-घर राजा के आगमन का समाचार पहुँचाया । थोड़े ही क्षणों में बस्ती के सब लोग विशाल मैदान में इकट्ठे हुए । उनको संबोधित करते हुए प्रधान ने कहा "हमारे राजा बहुत ही जल्दी यहाँ पधारनेवाले हैं । हमें उनका स्वागत धूमधाम से करना चाहिए ।"

प्रधान की बातें सुनते ही लोग बहुत ही प्रसन्न हुए । वे तुरंत अपने-अपने घर गये और रंग-बिरंगे कपड़े पहनकर लौटे । राजा के आगमन की प्रतीक्षा बड़ी ही उत्कंठा से करने लगे ।

थोड़ी ही देर में उन्होंने देखा कि राजा घोड़े पर आ रहे हैं । आगे दो सैनिक दो घोड़ों पर बैठे झंडे पकड़े आ रहे हैं । उनके

बाद हथियारों से लैस चार सैनिक आ रहे हैं । उनके पीछे राजा, राजकुमारी उनके दोनों तरफ दो अंगरक्षक, उनके पीछे दलनायक और तीन अंगरक्षक घोड़ों पर सवार चले आ रहे हैं ।

राजपरिवार जैसे ही उनके पास पहुँचा, अंगरक्षक घोड़ों से उतरे और उन घोड़ों के पास गये, जिनपर राजा और राजकुमारी सवार हैं । पहाड़ी जाति के प्रधान शंभु ने हाथ जोड़कर राजा को प्रणाम किया । मुस्कुराते हुए राजा घोड़े से उतरा और बड़े प्यार से शंभु के गले लगा । अपनी पुत्री को दिखाते हुए उसने कहा "यह मेरी पुत्री प्रियंवदा है । वह मेरा दलनायक वीरसिंह है ।" यों दोनों का परिचय कराया ।

शंभु राजा को पास ही के पेड़ की छाया में ले गया । वहाँ बाँसों से बनाया हुआ एक आसन था । उसी के बग़ल में एक छोटा सा आसन भी था, जिसपर उसने राजकुमारी को बैठने को कहा और राजा को खुद ही बाँसों से बनाये हुए आसन पर बिठाया । फिर प्रधान शंभु ने विनय से कहा "महाराज हम बड़े ही भाग्यवान हैं । आप जैसे महानुभावों का, हम जैसे दीनों को खोजते हुए आना हमारा भाग्य नहीं तो क्या है? आपके आगमन से हमारा रोम-रोम पुलकित हो रहा है । आपके और राजकुमारी के दर्शन का यह दृश्य हमारे हृदयों में शाश्वत रूप से रह जायेगा" । यह कहते हुए उसकी आँखों से आनंद के आँसू बहने लगे । इतने में कुछ युवतियाँ थालियों में खाने के लिए कुछ पदार्थ ले आयीं और उन्हें राजा, राजकुमारी तथा राजपरिवार के सम्मुख रखा । वे सब जब बड़े ही चाव से खा रहे थे, तब ड़फ़लियों की मधुर ध्वनि प्रतिध्वनित हुई । कुछ युवतियाँ बाँस की लकड़ियाँ ले आयीं और ड़फ़लियों की ध्वनि के अनुरूप उन लकड़ियों को लयबद्ध हिलाने-डुलाने लगी । फिर कुछ सुसज्जित युवक उन के बीच में आकर नाचने लगे । उन लकड़ियों के साथ और उनके बीच में किये जानेवाले इस नृत्य ने राजकुमारी का मन मोह लिया ।

नृत्य समाप्त हुआ । राजा अपने आसन से उठा और वलयाकार में घिरे हुए सब स्त्री-पुरुषों को देखा । वे सब आनंद से तालियाँ

RAZI

राज्य पर ऐसी विपत्ति आ पड़ी है, जिसकी कल्पना किसी ने कभी भी नहीं की और कर भी नहीं सकता। आप लोग ध्यान से सुनिये। यहाँ के पहाड़ों में विकसित 'शताब्दिका' पुष्पों की सुगंध से आकर्षित होकर, दक्षिणी भाग के समुँदर के बीच में से एक राक्षस जंतु आधी रात के समय बाहर निकलता है। बाहर आने के बाद उत्तरी दिशा की ओर बढ़ता है। सूर्योदय के होते-होते दिशाहीन होकर लौटता है और फिर से समुँदर के अंतराल में चला जाता है। उसके बाहर आने की वजह से समुद्री तट पर जो पेड़-पौधे हैं, इन्सान हैं, घर हैं, पशु हैं, सब के सब उसके पैरों तले रौंदे जा रहे हैं, उन सब का नाश हो रहा है।

बजाने लगे। फिर राजा ने अपना हाथ उठाते हुए कहा "हमारे प्रति जो आदर और सद्भावना आप लोग दिखा रहे हैं, उसके लिए मैं आप लोगों को हृदयपूर्वक धन्यवाद देता हूँ। कुछ दिनों पहले यहाँ से कुछ युवक आये थे, और राजधानी नगर में संपन्न स्पर्धाओं में भाग लेकर पुरस्कार भी प्राप्त किया था। मैं जानता हूँ कि उनकी विजय पर आप लोगों को बहुत ही आनंद हुआ है। तब मैंने आपको वचन भी दिया था कि उनमें से कुछ युवकों को मैं अपनी सेना में भर्ती करूँगा। मैं अपने उस वचन को अवश्य ही निभाऊँगा। परंतु अब यहाँ मैं एक मुख्य काम पर आया हुआ हूँ। केवल इसी प्रांत पर ही नहीं बल्कि माणिक्यपुरी

अप लोग सचमुच भाग्यवान हैं, क्योंकि उस भयंकर जंतु ने अब तक इस पहाड़ी प्रांत में अपना कदम नहीं रखा है। उस भयंकर जंतु का सामना करना, उसका संहार करना मानव के लिए असाध्य कार्य है। इसलिए, वह राक्षस जंतु हमारे राज्य में प्रवेश ना करे, इसके लिए राजगुरु की मंत्रणा के अनुसार मैंने एक योजना सोची है। मालूम हो रहा है कि राक्षस जंतु 'शताब्दिका' पुष्पों की सुगंध से आकर्षित होकर उत्तरी दिशा की ओर चला आ रहा है। इसलिए, अब हमारे सामने एक ही उपाय है और वह है-'शताब्दिका' पुष्पों को उसी जगह पर पहुँचाना, जहाँ वह राक्षस जंतु रह रहा है। इसके अलावा हमें कोई दूसरा उपाय नहीं

सूझ रहा है । इस कार्य-सिद्धि के लिए मुझे आप लोगों की मदद चाहिये ।"

राजा की बात समाप्त हुए कुछ क्षण गुज़र गये लेकिन किसी भी ने अपना मुँह नहीं खोला । चुप्पी तोड़ते हुए प्रधान शंभु ने कहा "महाराज, हम उन लोगों में से हैं, जो अपने राज्य की रक्षा के लिए प्राण भी त्याग देना अपना भाग्य समझते हैं । उस राक्षस जंतु से अपने राज्य की रक्षा करना हम अपना परम कर्तव्य मानते हैं । आज समुद्री तट के प्रांतों पर जो विपदा आयी है, हो सकता है, कल हम पर आये । मेरा विश्वास है कि हम किसी ख़ास प्रांत के या प्रदेश के ही नागरिक नहीं हैं, बल्कि संपूर्ण देश के नागरिक हैं । जिस दिन लोग अपने को अपने प्रांत तक ही सीमित रखेंगे, तब देश ख़तरे में पड़ जायेगा । क्योंकि अपने को देश से अलग समझनेवाले देशद्रोही हैं । वे स्वयं अपराध भी कर रहे हैं और साथ ही यह भी भूल रहे हैं कि इस अलगाव की वजह से देश ही नहीं, बल्कि स्वयं किसी दिन कष्टों में फँस जाएँगे । दुश्मन इस मौके का फ़ायदा उठाकर संपूर्ण देश को तहस नहस कर देगा । इस सत्य को बताकर आपने हम पर बहुत उपकार किया है, इसके लिए हम आपके कृतज्ञ हैं । अब आप आज्ञा दीजिये कि हमें क्या करना है? हम अपना कर्तव्य निभाने में किसी प्रकार की आनाकानी नहीं करेंगे ।"

प्रधान के वचन की स्वीकृति देते हुए वहाँ

उपस्थित सब लोगों ने तालियाँ बजायीं । तब, उस भीड़ में से एक युवक आगे आया और राजा को प्रणाम किया ।

जैसे ही राजकुमारी ने उसे देखा, राजा से धीरे से कहा "विचित्र पुष्पों को भेंट में देनेवाला युवक यही है ।"

उस युवक ने कहा "हाँ राजकुमारी, मुझे मालूम नहीं था कि इन 'शताब्दिका' पुष्पों से ऐसी विपदा आयेगी और यह भी सच है कि उन पुष्पों को देनेवाला भी मैं ही हूँ ।" फिर उसने राजा की ओर देखते हुए कहा "मैं अभी उस 'शताब्दिका' पुष्पों को लेकर उस जगह पर जाऊँगा, जहाँ वह राक्षस जंतु निवास कर रहा है । राजन्, आप मुझे प्रस्थान होने की आज्ञा दीजिये ।"
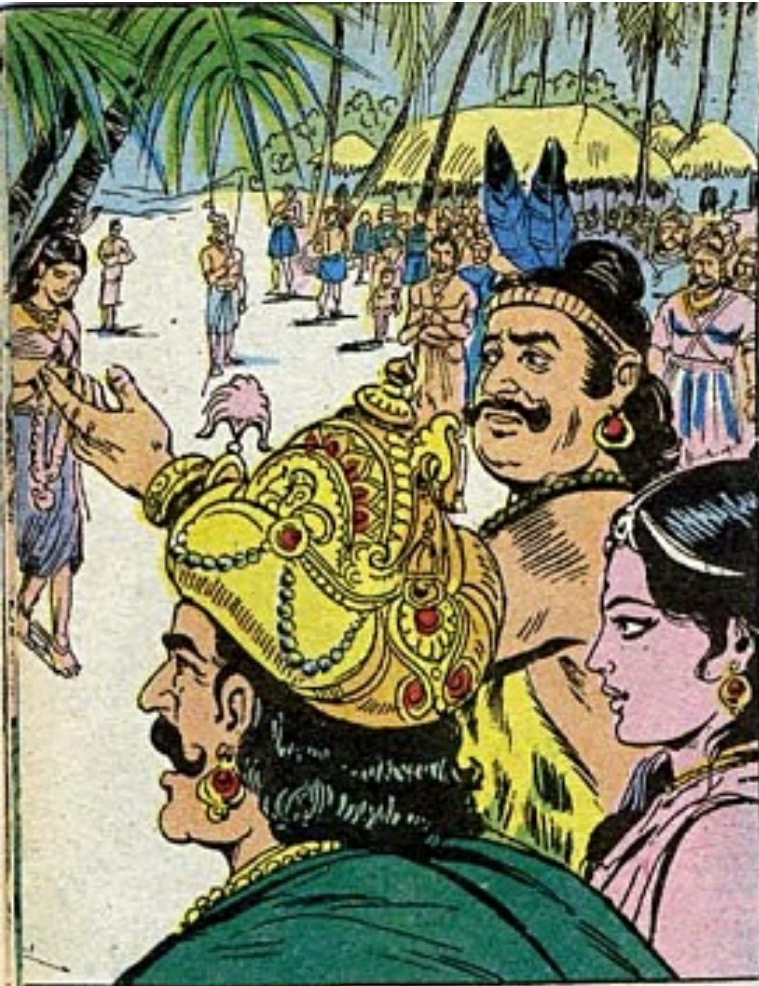
"उत्तुँग, तुम्हारी बातों से मुझे बहुत ही आनंद हुआ है । पहले तुम अपने प्रधान की अनुमति लो" राजा ने कहा ।

उत्तुँग ने अपने प्रधान को देखा ।

'शाबाश उत्तुँग । तुम्हारे इस साहस पर तुम्हें मेरी बधाई । पर यह तो बताओ कि उस राक्षस जंतु को तुम अपने वश में कैसे करोगे?" प्रधान ने पूछा ।

"महाराज ने जैसे कहा, कुछ 'शताब्दिका' पुष्पों को तोड़कर उन्हें एक नाव में ले जाऊँगा और उस राक्षस के पीछे-पीछे जाकर उस जगह पर रख आऊँगा, जहाँ उसका निवास-स्थल है । ऐसा करने पर उस राक्षस जंतु का माणिक्यपुरी आने का सवाल ही नहीं उठता" उत्तुँग ने बड़े ही विश्वास के साथ कहा ।

"तुमने सही सोचा है । वहाँ जाकर लौटने में अवश्य ही कुछ दिन लगेंगे । तब तक तुम्हारे परिवार की रक्षा का भार हम पर है" राजा ने आनंद से कहा ।

प्रधान शंभु ने कहा "उत्तुँग का परिवार कोई बड़ा नहीं है । बचपन में ही उसके माँ-बाप गुज़र चुके हैं । अब उसकी एक छोटी बहन मात्र है ।" इतने में लोगों के बीच में से पंद्रह साल की एक लड़की अपने हाथों में फूलों की माला लिये आगे आयी ।

उत्तुँग ने राजा से कहा "यह मेरी छोटी बहन रजनी है" । रजनी ने माला राजकुमारी के गले में ड़ाली । लोग आनंद से तालियाँ बजाने लगे । राजकुमारी ने मंद मुस्कान भरते हुए रजनी का हाथ पकड़ा, गालों पर चुटकी दी, और उत्तुँग से कहा "तुम्हारे लौटते तक तुम्हारी बहन रजनी मेरे साथ राजप्रासाद में रहेगी" । फिर रजनी से पूछा "आओगी ना?" ।

रजनी ने लज्जा से सर झुकाया और अपनी स्वीकृति देने के भाव में उसने अपना सर हिलाया ।

फिर राजा ने शंभु से कहा "प्रियंवदा 'शताब्दिका' पुष्पों को बहुत चाहने लगी है । उनसे लगाव हो गया है । उन्हें राजउद्यान में पनपाने की भी तीव्र इच्छा रखती थी । परंतु अपनी इस इच्छा को वह साकार नहीं कर पायी क्योंकि राजगुरू ने उससे यह कहकर सावधान कर दिया था कि ये

शापग्रस्त पुष्प हैं । अब उसकी वह आशा नहीं रही, पर मेरे साथ-साथ आयी है उन पुष्पों को देखने के लिए ही । क्या दूर से ही सही, उन पुष्पों को देख सकेगी?''

शंभु ने बताया, ''अवश्य, यह कोई मुश्किल काम थोड़े ही है ।''

''आप अनुमति दें तो मैं स्वयं राजकुमारी के साथ जाऊँगा और वे पुष्प दिखाऊँगा । घोड़ों पर जाने से जल्दी ही लौट भी सकते हैं'' उत्तुंग ने कहा ।

राजा ने तब अपनी पुत्री से कहा ''ठीक है, अभी निकलो और जल्दी लौट आना । अपने साथ अंगरक्षक को भी ले जाना'' फिर प्रधान शंभु की ओर मुड़ते हुए कहा ''चलिये, बस्ती देख आयेंगे ।''

आगे राजकुमारी, पीछे उत्तुंग घोड़ों पर बैठकर निकले । अंगरक्षक भी घोड़े पर पीछे-पीछे चला । वे तीनों उस पहाड़ की तरफ निकले, जहाँ 'शताब्दिका' पुष्प विकसित होते हैं । बहुत दूर सफ़र करने के बाद एक तंग रास्ते में वे जाने लगे । तब उत्तुंग ने कहा ''यहाँ बड़ी सावधानी से आपको घोड़ा चलाना होगा, धीरे-धीरे जाना होगा । इस रास्ते के पेड़ों की शाखाएँ बहुत ही झुकी हुई होंगीं ।''

थोड़ी देर जाने के बाद उत्तुंग ने कहा ''देखिये, आकाश को छूते हुए उन पेड़ों पर विकसित चमकते हुए उन पुष्पों को । वे ही 'शताब्दिका' पुष्प हैं ।''

उस अद्‌भुत दृश्य को देखकर राजकुमारी स्तब्ध रह गयी । पहाड़ पर बाँस की झाड़ियों की तरह दिखनेवाले पेड़ों पर, चमकते हुए उन लाल पुष्पों को देखकर राजकुमारी ने कहा ''क्या थोड़ी दूर और आगे चलेंगे?''

''नहीं राजकुमारी, घोड़े और आगे नहीं जा पायेंगे । पैदल चलकर जाना मुश्किल होगा'' उत्तुंग ने कहा ।

राजकुमारी पुष्पों को देखती हुई बुत की तरह खड़ी रह गयी । शांति-भंग करते हुए उत्तुंग ने पूछा ''राजकुमारी, अब हम वापस लौटें?''

''ऐसे सुंदर पुष्पों का शापग्रस्त होना बडे दुर्भाग्य की बात है । लेकिन मैं समझती हूँ कि अवश्य ही कोई चमत्कार होगा और इससे ये पुष्प शाप से विमुक्त हो जाएँगे'' कहती

हुई राजकुमारी उन फूलों को फिर से एकटक देखती रही और फिर घोड़े को पीछे घुमाया ।

वे जब बस्ती पहुँचे, तब तक राजा अपना राज्य लौटने सन्नद्ध था । पिता को देखकर राजकुमारी ने कहा "पिताश्री, बड़ा ही अद्भुत दृश्य देखा है । पर उन पुष्पों को पाना बड़ा कठिनतम काम है ।"

"कठिन काम करने में ही हमें मज़ा आता है राजकुमारी" शंभु ने कहा ।

राजा ने उत्तुँग को अपने पास बुलाया और कहा "मेरी हृदयपूर्वक इच्छा है कि तुम अपने कार्य में विजयी हो । तुम्हारे आगमन की प्रतीक्षा केवल मैं ही नहीं बल्कि राज्य की सारी जनता बड़ी उत्सुकता से करेगी । देश-कल्याण और शांति के लिए तुम जो कार्य करने जा रहे हो, बहुत ही प्रशंसनीय है ।" फिर शंभु से कहा "उत्तुँग के निकलने के बाद उसकी बहन को राजप्रासाद ले आना ।" अपने आसन से उठकर राजा आगे बढ़ा ।

राजकुमारी ने रजनी के कंधे पर अपना हाथ रखा । उसका हाथ बड़े प्यार से चूमा और घोड़े पर बैठी । राजा, दलनायक और अंगरक्षक घोड़ों पर चढ़ बैठे । शंभु ने प्रणाम करते हुए उन्हें बिदा किया । राजा अपने परिवार सहित चल पड़ा ।

उनके चले जाने के बाद शंभु ने बड़े प्यार से उत्तुँग के कंधे पर हाथ रखते हुए कहा "पुत्र उत्तुँग, तुम्हारे साहस की कितनी ही प्रशंसा करूँ, कम है । तुम्हारे कारण हमारे उत्तुँग वंश का यश शाश्वत हो गया । तुमने जिस कार्य का संकल्प किया है, वह खतरों से खाली नहीं, परंतु तेरे साथ जगत्माता का आशीर्वाद है। तुमपर उसकी कृपा-दृष्टि है और अवश्य ही तुम विजय के साथ ही लौटोगे ।" उसके शब्दों में वात्सल्य और आनंद भरा हुआ था ।

—सशेष

अवतारपुरुष

धुन का पक्का विक्रमार्क पेड़ के पास लौटा । पेड़ से लाश को उतारा और अपने कंधे पर डाल लिया । हमेशा की तरह मौन रहकर श्मशान की तरफ़ बढ़ने लगा । तब शव के अंदर का बेताल बोला "राजन्, आधी रात की इस वेला में बिना विश्राम के, निद्रा और अन्य सुखों से दूर होकर इस श्मशान में तुम जो व्यर्थ कष्ट उठा रहे हो, उसे देखकर मुझे लगता है कि तुम लक्ष्य हीन हो, भटक गये हो । तुम तो जानते ही हो कि इस श्मशान में विषसर्प हैं, भूखे सियार हैं और तरह-तरह के विषैले कीड़े हैं । मालूम नहीं, कब, किस क्षण में वे तुम्हारा प्राण ले लें । मेरी बात सुनो, यह निरर्थक परिश्रम छोड़ो । आखिर बताओ तो सही, तुम्हारे जीवन का क्या लक्ष्य है? यश कमाना चाहते हो या असीम संपत्ति, या अधिकार-प्राप्ति? मैं क्यों तुम्हें गुमराह होने से बचाना चाहता हूँ, समझने की कोशिश करो । जब तक

बैताल कथा

किसी प्रकार का लाभ नहीं होगा। वह उन्हें अपने ओहदों से निकाल देना चाहता था, इसलिए उसने मंत्री से इस संबंध में सलाह पूछी।

मंत्री ने पहले पहल गायकों को बुलाया। उन्हें बुलाकर उनसे कहा कि तुम अपने गीतों से वर्षा बरसावो। यह उनसे संभव नहीं हो पाया। राजा ने उन सबको बरख्वास्त कर दिया। फिर मंत्री ने चित्रकारों व शिल्पकारों को बुलाया और उनसे कहा कि तुम अपनी कला से भगवान के रूप की कल्पना करो। चित्रकारों ने भगवान के चित्र खींचे। शिल्पकारों ने भगवान के शिल्पों की सृष्टि की। उन्हें देखकर राजा ने पूछा "तुम्हारे पास ऐसे क्या प्रमाण हैं, जिनसे तुम प्रमाणित कर सकते हो कि भगवान ऐसे ही होते हैं?"

वे इस प्रश्न का उत्तर दे नहीं पाये। राजा ने उनकी भी छुट्टी कर दी।

इसके बाद मंत्री ने नाट्याचार्यों व नर्तकियों को बुलाया। उन्हें एकांत में एक कहानी सुनायी और उनसे कहा कि इस कहानी को, बिना शब्द निकाले, मौन होकर राजा के सम्मुख अपने अभिनय द्वारा प्रस्तुत करो। तुम्हारे इस अभिनय के आधार पर राजा बताएँगे कि कहानी क्या है? अपने कार्य में असफल नाट्याचार्य और नर्तकियाँ भी दरबार से निकाल दिये गये।

आख़िर मंत्री ने कवियों और पंडितों को बुलाया। उनसे कहा "युवराज युद्ध-विद्या

मनुष्य आवेश और उद्विगन्ता आदि तामस गुणों के वश ना होकर, अपने जीवन के लक्ष्य निर्णय नहीं करेगा, तब तक कोई भी महान् कार्य कर नहीं पायेगा। महान कार्य-सिद्धि तभी उसे संभव होगी, जब वह उल्लिखित दुर्गुणों से दूर रहेगा। ऐसा ना होने पर दिव्यनाथ पंडित की तरह तुम्हारी भी स्थिति हो जायेगी, जो यह जान नहीं पाया कि जीवन में क्या पाना है या जो पाया है, वह आखिर है क्या? तुम्हारे मार्गदर्शन के लिए दिव्यनाथ की कहानी मैं तुम्हें सुनाता हूँ। आराम से सुनो।"

जगतसेन नामक एक राजा था। अपने दरबार के कलाकारों से उसे चिढ़ थी। वह समझता था कि इन कलाकारों से देश को

में निपुण् हैं । लेकिन ज्ञान से संबधित विद्या में वे बहुत ही कच्चे हैं । उन्हें सब शास्त्रों में अपने से भी अधिक पारंगत बनाओ ।"

उन लोगों ने युवराज की परीक्षा ली । वह बहुत ही साधारण बुद्धि का है । छोटे-से विषय को दस बार कहने पर भी समझने की शक्ति उसमें नहीं है । उसे इस बात का धमंड भी है कि मैं युवराज हूँ । इसलिए उसे समझाना अथवा और विद्याओं में उसे निपुण बनाना उनके बस की बात नही है । उन्होने अपनी हार मान ली । यों वे भी दरबार से निकाल दिये गये ।

जब जगतसेन के राज्य में यह हो रहा था, तब पंडित दिव्यनाथ अपनी प्रतिभा से असीम कीर्ति, प्रतिष्ठा और धन कमाना चाहता था । इसके लिए पड़ोस के राज्य के राजा महासेन के दरबार में गया । दरबार के पंडितों का ज्ञान अधूरा था । अपनी रक्षा के लिए उन्होने भरे दरबार में दिव्यनाथ की खिल्ली उड़ायी ।

महासेन ने दिव्यनाथ से कहा "पड़ोस देश का राजा जगतसेन दूर का मेरा रिश्तेदार है । वह कलाकारों से चिढ़ता है । उसने सब कलाकारों को अपने दरवार से निकाल दिया है । अगर तुम अपनी प्रतिया वहाँ साबित कर सकोगे तो मेरे दरवार के सब पंडित तुम्हारे शिष्य बन जाएँगे ।"

राजा की यह चुनौती सुनकर दिव्यनाथ में हठ और प्रबल हो गया । वह सीधे जगतसेन के पास गया । जगतसेन ने नाराज़ होते हुए दिव्यनाथ से कहा "मैं कवि, पंडित और कलाकारों में विश्वास नहीं रखता । उनके बारे में मेरा कोई अच्छा अभिप्राय भी है । अतः तुम किसी और राजा के पास जाओ और अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करो ।"

दिव्यनाथ ने अपनी हार नहीं मानी । उसने राजा से कहा" प्रभु, मैं केवल कवि और पंडित ही नहीं हूँ । सब कलाओं में मैं प्रवीण हूँ । बहुत-से राजाओं ने मुझे आश्रय देने का वचन दिया । भोजराज से कालिदास जिस प्रकार आकर्षित हुए, उसी प्रकार मैं भी आपसे आकर्षित हुआ हूँ ।" यह सुनकर जगतसेनं ने बहुत ही प्रसन्न होते हुए पूछा "मुझमें ऐसी क्या विशेषता है?"

'प्रभु, आप कारण के जन्मदाता हैं,

अवतारपुरुष हैं, इसी कारण से आपके दरबार के सभी कलाकार विफल हुए हैं" दिव्यनाथ ने उसकी प्रशंसा करते हुए कहा ।

जगतसेन सोच में पड़ गया, फिर पूछा "मेरी श्रेष्ठता और दरबार के उन कलाकारों की विफलता का क्या संबध है?"

"प्रभू, आपके शासन -काल में देश शश्य श्यामल है । प्रकृति प्रशांत है । वातावरण ऋतु-धर्मो का पालन ठीक-ठीक कर रहा है । इस देश में अकाल मृत्यु और असमय वर्षाएँ नहीं हो रही हैं । अब ही सही, आप अपनी श्रेष्ठता स्वीकार करेंगे या नहीं?" दिव्यनाथ ने पूछा ।

दिव्यनाथ की प्रशंसा के प्रवाह में जगतसेन बह गया । उसने पुछा "शिल्पी और चित्रकारों के बारे में तुम्हारी राय क्या है?"

"प्रभू, प्राचीन काल में परशुराम एक अवतार पुरुष था । रामावतार के बाद परशुराम की तेजस्विता घट गयी । यह तो सबको विदित है कि नया अवतार जब अवतरित होता है तब पुराने अवतारों की महिमा घटती है । अब भगवान आपके अवतार में वर्तमान हैं । यही कारण है, आपके कलाकारों के प्रयत्न विफल हुए । पुराने अवतारों के शिल्पों में वे तेजस्विता दिखा नहीं पाये । आपके वर्तमान अवतार सम्मुख वे फ़ीके पड़ गये ।" दिव्यनाथ ने कहा ।

"क्या प्रमाण है कि मैं भगवान हूँ? एक चमत्कार करना भी मुझे नहीं आता" जगतसेन ने कहा ।

"श्रीराम ने कोई चमत्कार नहीं दिखाया । गौतमबुद्ध ने कोई चमत्कार नहीं किया । उनके किये गये महान कार्यों के आधार पर वे भगवान प्रमाणित हुए । कंस, जरासंध, शिशुपाल, दुर्योधन आदि ने मायावी कृष्ण को क्या भगवान माना है? जिनमें दैवभक्ति है, वे ही भगवान को जान सकते हैं । मुझमें बचपन से ही दैवभक्ति है, इसीलिए मैं आपमें भगवान देख रहा हूँ । यह सच है और सच होते हुए भी कोई प्रमाण दिखा नहीं सकता ।" दिव्यनाथ ने राजा को अपनी बातों से आश्चर्य में डुबोते हुए कहा ।

इन बातों को सुनकर जगतसेन खुशी से फूले ना समाया । दिव्यनाथ की अक्लमंदी की उसने वाहवाही की । उससे पूछा कि

तो फिर नाट्याचार्यों तथा नर्तकियों के बारे में तुम्हारा क्या विचार है?

"प्रभु, भगवान का अंश लिये हुए महानुभाव जिन कलात्मक खंडों की सृष्टि करते हैं, उदाहरण के लिए कथाएँ, काव्य आदि, उन्हीं को स्फूर्ति-स्त्रोत्र मानकर अभिनेतागण या नर्तकियाँ अभिनय कर सकते हैं। आप तो अवतारपुरुष हैं। उन प्राचीन कथाओं अथवा कविताओं की जगह पर आप नयी कथाओं और कविताओं की सृष्टि कीजिये। तब वे उसके अनुरूप अभिनय करेंगे, जो आसानी से आपकी समझ में आ जाएगा। यह तो सरासर अन्याय है कि उन्हें अज्ञानियों की रचनाओं से प्रेरणा लेकर नाचने या अभिनय करने को कहा जाए।" दिव्यनाथ की बातें सुनकर राजा अवाक् गया।

पास ही बैठे दिव्यनाथ की बातें सुनते हुए मंत्री को ये बातें रुचिकर नहीं लगीं। उसने तुरंत कुछ अभिनेताओं को बुलाया। राजा ने उन्हें एक कहानी सुनायी और आज्ञा दी कि कल इस कहानी को बिना एक भी शब्द मुँह से निकाले अभिनय में प्रदर्शित कीजिये। दूसरे दिन अभिनेताओं ने कर दिखाया तो जगतसेन बहुत आनंदित हुआ। उसने बड़े उत्साह से कहा" दिव्यनाथ का कथन अद्भुत है। तुम लोगों का अभिनय भी उत्तम है।"

"आप लोगों का अभिनय मैं समझ नहीं पाया हूँ। कम से कम दिव्यनाथ की समझ में आया होगा, इसका भी मुझे संदेह है। आप ही उनसे पूछिये" मंत्री ने बड़े ही व्यंग्य

के स्वर में कहा।

इसपर दिव्यनाथ हँसा और बोला"अवतारपुरुषों की लीलाओं को बड़े-बड़े वेदांती क्या, ब्रह्मा जैसे भगवान भी समझ नहीं पाते। यह तो उनकी पहुँच के बाहर है। जब तक अवतारपुरुष राजा नहीं बताएँगे तब तक भला हम जैसे तुच्छों की समझ में कैसे आयेगा?"

जगतसेन आनंद से अट्टहास करता हुआ बोला "दिव्यनाथ, आज तक योगनिद्रा में जो अवतारपुरुष मुझमें सोया हुआ था, उसे तुमने जगाया है। धन्यवाद। तुम अगर मेरे पुत्र को सकल शास्त्रों में पारंगत बना पाओगे तो मैं आजन्म तेरा कृतज्ञ रहूँगा, ऋणी रहूँगा।"

"युवराज को विद्यादान देने का जो अवकाश मुझे आपने प्रदान किया, उसके लिए धन्यवाद । उसे सर्व विद्याओं में प्रवीण बनने के लिए मुझे केवल एक दिन पर्याप्त है" दिव्यनाथ ने बड़े ही विश्वास से कहा ।

दिव्यनाथ की इस बात पर कि एक ही दिन पर्याप्त है, राजा चकित रह गया ।

दिव्यनाथ युवराज को एकांत में ले गया और बोला "तुम्हारे पिताश्री भगवान हैं, सृष्टि के जन्मदाता हैं, तुम भी अवतारपुरुष बनना चाहते हो तो इसके दो मार्ग हैं । तुम्हें सप्ताह में दो बार उपवास करना होगा । पेड़ में उल्टे लटककर तपस्या करनी होगी । दस साल तपस्या करते हुए सारे शास्त्रों का तुम्हें अध्ययन करना होगा । यह मार्ग कठिनतम मार्ग है । अब दूसरा मार्ग भी ध्यान से सुनो। तुम अपनी जीभ निकालोगे तो मैं उसपर बीजाक्षर लिख दूँगा । इससे सब विद्याओं में तुम पारंगत हो जाओगे । तुम्हीं इन मार्गों में से एक मार्ग चुन लो, जो तुम्हें पसंद आये ।"

युवराज ने बड़े ही उत्साह से यह कहते हुए जीभ बाहर निकाली कि मुझे दूसरा मार्ग ही पसंद है ।

दिव्यनाथ युवराज की इस बात पर संतुष्ट हुआ और बोला "थोड़ा ठहर जाओ । इसके कुछ विशेष नियम हैं । मैं जब बीजाक्षर तेरी जीभ पर लिखूँगा, तब तुम्हें अपना क्रोध त्यागना होगा और शांत रहना होगा । जाति और कुल का भेदभाव किये बिना तुमसे जो भी बड़े हैं, उन सबका आदर करना होगा । अपने से छोटों से प्रेम-भाव से बरतना होगा । हो सकता है, तुम सब कुछ जानते हो, परंतु दूसरों की सलाह लिये बिना तुम कोई काम नहीं करोगे । सदा हँसते रहना चाहिये । मैने जो-जो नियम बताये, उन सब का तुमने ठीक तरह से पालन नहीं किया तो मेरे लिखे हुए बीजाक्षर का हर अक्षर प्रेत बनकर तुम्हें तरह-तरह के कष्टों में ड़ाल देगा । अब बोलो, तुम्हें जो बोलना है ।"

युवराज को लगा, इन नियमों के पालन में कोई कठिनाई नहीं है । उसने सब नियमों को मान लिया । दिव्यनाथ युवराज की ज़ीभ पर बीजाक्षर लिखने के बाद राजा जगतसेन के पास गया और कहा" राजन्, युवराज

सूक्ष्म से सूक्ष्म बात को भी तक्षण ही समझ जाते हैं। मैने आपसे जो समय माँगा था उससे भी कम समय में उन्होने सकल शीस्त्रों में शिक्षा प्राप्त की।"

राजा जगतसेन बहुत ही खुश हुआ। इस खुशी को देखते हुए मंत्री की समझ में नहीं आया कि क्या कहूँ और क्या ना कहूँ? फिर भी उसने धीरज बाँधते हुए कहा "महाराज, यह जानकर आनंद हुआ कि युवराज सकल शास्त्रों में पारंगत हो गये हैं। कठोपनिषद् में मेरे कुछ संदेह हैं। युवराज से पूछकर अपने संदेह दूर करूँगा।"

यह सुनते ही दिव्यनाथ धबराता हुआ बोला "प्रभू, धर्मराज ने किशोर अभिमन्यू को चक्रव्यूह तोड़ने के लिए भेजा तो परिणाम क्या हुआ? अनुभव-शून्य विद्या के योग्य नहीं होते। हमारा युवराज और दस वर्षों तक अभिमन्यू की तरह है। वह किसी भी विद्या को सुगमता से सीख सकता है परंतु विद्याबोधन का साहस किया तो प्राण ही संकट में पड़ जायेगा।"

जगतसेन चिंताग्रस्त होकर बोला "इसका क्या प्रमाण है कि मेरा पुत्र विद्याओं में पारंगत हुआ है?"

"विद्याओं की प्रवीणता उनके व्यवहार से जानी जा सकती है। आज से युवराज के व्यवहार में होते हुए परिवर्तन को देखते जाइये" दिव्यनाथ ने अपने को संभालते हुए कहा।

एक ही सप्ताह में युवराज में पर्याप्त परिवर्तन हुए। अपने पुत्र के व्यवहार से संतृप्त होकर महाराज ने दिव्यनाथ से प्रार्थना की कि आप अवश्य मेरे दरबार में रहिये। दिव्यनाथ ने राजा की प्रार्थना को स्वीकार नहीं किया। उसने कहा "अब मेरे जीवन का एक ही लक्ष्य है। मैं आज से देशों में भ्रमण करूँगा और आपकी कीर्ति का झंडा हर जगह हर देश में फहराता फिरूँगा।"

जगत्सेन दिव्यनाथ की निस्वार्थता तथा राजभक्ति पर अति आनंदित हुआ और उसे अमूल्य पुरस्कार देकर सत्कार किया। दिव्यनाथ वहाँ से निकलकर महासेन के दरबार में पहुँचा।

बेताल ने विक्रमार्क को यह कहानी सुनायी और कहा "महाराज, दिव्यनाथ ने प्रसिद्धि,

कीर्ति, धनार्जन को अपने जीवन का लक्ष्य माना है । इन्हीं के लिए वह महासेन के दरबार में गया है । किन्तु महासेन को उसके पांडित्य पर संदेह था, इसलिए उसे अपने रिश्तेदार जगतसेन के पास भेजा । दिव्यनाथ ने अपनी अक़्लमंदी से यश भी पाया और राजा से अमूल्य पुरस्कार भी । फिर भी उस राजा को छोड़कर फिर से महासेन के पास चले जाना अजीब नहीं लगता? आख़िर उसने क्या पाया है और क्या पाना चाहता है, उसे स्वयं मालूम नहीं । ऐसी संदिग्धावस्था में वह लड़खड़ा नहीं गया? इससे क्या मालूम नहीं होता कि दिव्यनाथ की बुद्धि अस्थिर है? वह ध्येयहीन है । मेरे इन संदेहों की निवृत्ति, तुम जानकर भी नहीं करोगे तो तुम्हारा सर टुकड़ों में फट जायेगा ।"

तब विक्रमार्क ने कहा" हाँ, यह अवश्य है कि दिव्यनाथ राजदरबार में अपने पांडित्य का प्रदर्शन करना चाहता है और तद्वारा कीर्ति तथा धन कमाना चाहता है । उसने भली-भाँति समझ लिया कि जगतसेन में कलाभिमान की बात तो दूर, रत्ती भर भी अक़्ल नहीं है । इसीलिए उसने उस राजा के दरबार में अपने शास्त्र और पांडित्य का प्रदर्शन नहीं किया बल्कि उसे अपने बुद्धिकौशल व लोकज्ञान का प्रदर्शन करना पड़ा । जब उसने जगतसेन से कहा कि तुम अवतारपुरुष हो तो बिना प्रयास के वह विश्वास कर बैठा । दिव्यनाथ को मालूम था कि ऐसे बुद्धिहीन राजा के दरबार में रहना उसके लिए संभव नहीं । उसे धन के साथ-साथ चाहिये कीर्ति और यह अपने पांडित्य-प्रदर्शन से ही मिलेगी । यही कारण है, जगतसेन की प्रार्थना को भी ठुकराकर वह महासेन के दरबार में गया ।" यों बेताल महाराज का मौन भंग करने में सफल हुआ । वह शव को लेकर ग़ायब हो गया और पेड़ पर चढ़ बैठा ।

आधार—'बसुंधरा' की कहानी

चन्दामामा परिशिष्ट-५८

भारत के पशु-पक्षी :

रीसस बंदर

मनुष्य के रक्त को दो भागों में विभाजित करते हैं-आर. हेच पोज़िटिव, आर हेच. नेगिटिव, आर हेच. नामक अक्षर 'रीसस' नाम के एक जाति के बंदर के सूचक हैं । तो इसका मतलब यह हुआ कि मनुष्य के रक्त से निकट संबंध रखते है, इस जाति के बंदर ।

इन बंदरों में मुख्यतया 'लांगर्स और मेकाक्स' नाम के दो प्रकार के हैं । इनमें 'रीसस मेकाक' संसार में सुप्रसिद्ध हैं । क्योंकि इनका रक्त लगभग मनुष्य के रक्त की ही तरह का होता है । इन बंदरों का उपयोग अधिकतर वैद्य अनसंधान के कामों में किया जाता है । इसलिए हमारे देश से अधिक संख्या में इन बंदरों का निर्यात किया जाता था । इस वजह से इनकी संख्या बहुत ही कम हो गयी और इस जाति के आमूल नाश की स्थिति आसन्न हो गयी । भारत सरकार ने इस स्थिति को दृष्टि में रखकर इनके निर्यात पर रोक लगा दी और उनकी सुरक्षा का प्रबंध किया । 'रीसस' बंदर अधिकतर उत्तरप्रदेश में और मध्यप्रदेश में बसते हैं । साल के छह महीनों में इन्हें कड़ी सर्दी का सामना करना पड़ता है, इसलिए इनके शरीरों पर घने ऊँचे-ऊँचे बाल होते हैं । इनकी लंबाई करीबन ६० सेंटिमीटर की है ।

गाँवों में, शहरों में मुख्यतया मंदिरों के पास, तालाबों के पास, रेल्वे स्टेशनों के निकट ये भीड़ बनकर घूमते रहते हैं ।
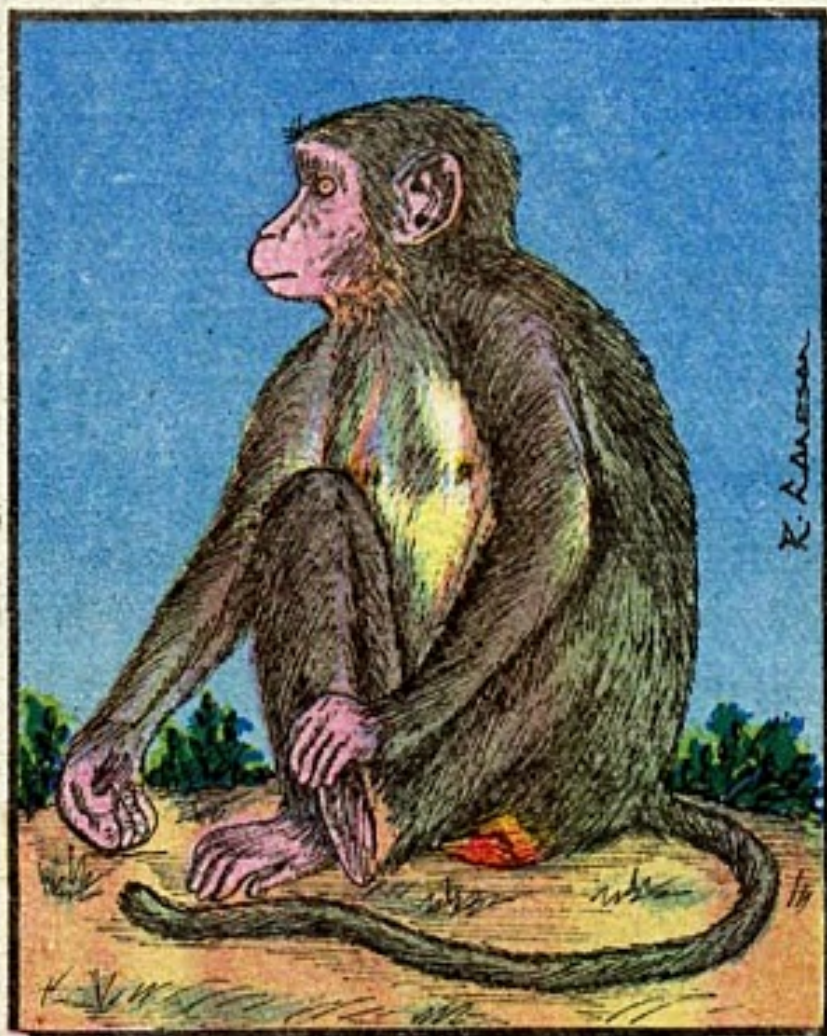
आधुनिक भारतीय चित्रकार राजा रवि वर्मा

आज का केरल राष्ट्र १९४७ तक तिरुवान्कूर तथा कोचिन नामक दो रियासतों के अधीन था ।

राजा रवि वर्मा, आधुनिक भारतीय चित्रकला-क्षेत्र में विशिष्ट स्थान रखते हैं । ये तिरुवान्कूर राजवंश के हैं । वे तिरुवान्कूर की राजधानी तिरुवनंतपुर से चालीस कि.मी. दूरी पर स्थित एक गाँव में १८४८ में जन्मे । अपनी छोटी उम्र में जब कि वे ठीक तरह से चल भी नहीं पाते थे, रवि-वर्मा ने दीवारों पर पशुओं की तस्वीरें और पेड़ों के चित्र खींचना शुरू कर दिया । उन्हें ऐसा करने से बड़े मना भी करते थे, किन्तु उनकी बातों की परवाह किये बिना ये चित्र खींचते ही रहते थे । उनके मामा राजवर्मा ने देखा कि बच्चे में चित्रकला के प्रति बडा आकर्षण है, लगाव है और उसमें पटुता और सामर्थ्य भी है। वे स्वयं एक चित्रकार थे, इसलिए उन चित्रों को देखते हुए उन्हें बेहद ख़ुशी होती थी । उन्होंने रविवर्मा को काफ़ी प्रोत्साहन दिया ।

रविवर्मा बाद तिरुवनंतपुरम पहुँचे । उन दिनों में तैलचित्रों की प्रसिद्धि थी । राजभवन में काम करते हुए अलगिरिनायुडु नामक एक चित्रकार से, तैलचित्रों को खींचने की कला रविवर्मा ने सीखी । सुप्रसिद्ध डच के चित्रकार थियोडोर जेनसेन का प्रभाव

रविवर्मा पर अधिक पड़ा । यद्यपि उन्होंने उस चित्रकार से स्वयं इस चित्रकला की शिक्षा प्राप्त नहीं की, फिर भी उन चित्रों को खींचने की पद्धति से रविवर्मा बहुत ही प्रभावित हुए ।

रविवर्मा ने रामायण, महाभारत जैसे हमारे पुराणों और इतिहासों का खूब अध्ययन किया, उनका मनन किया । उनके पात्रों और दृश्यों को पाश्चात्य शैली में उन्होंने खींचे और सबों का ध्यान आकृष्ट किया ।

१८८२ में मद्रास के गवर्नर ने एक चित्र-प्रदर्शनी का प्रबंध किया, जिसमें रविवर्मा के चित्र को सुवर्ण पदक मिला । वह चित्र वियन्ना में प्रदर्शित हुआ, जिससे रविवर्मा जगत्-विख्यात हुए । ये ८७ की आयु में दिवंगत हुए, तब तक संसार-भर में इनका यश फैला ।

विश्वकवि रवीन्द्रनाथ टागौर ने रविवर्मा के चित्रों के बारे में यों कहा "रविवर्मा के चित्रों के देखते हुए मैंने कितने ही प्रातःकाल बड़े आनंद से बिताये । उन चित्रों ने मेरे मन को मोह लिया है, उनसे मेरा अपार प्रेम है । इन चित्रों में पुराणों के पात्रों को सजीव रूप दियां गया है, उन पात्रों के हाव-भाव तथा उन दृश्यों को बहुत ही अद्भूत रूप से दर्शाया है । ये चित्र हृदय-पटल पर अमिट छाप डालते हैं ।"

क्या तुम जानते हो?

१. दशरथ महाराज की पुत्री कौन है? उससे किसने विवाह किया?
२. 'टेबिल टेन्निस' के खेल को किसने रूप दिया? कब?
३. क्या जानते हो, भोपाल और भोजपाल का क्या संबंध है?
४. भूमि के कितने भाग तक जल हावी हो गया है?
५. 'तमिलवेद' नामक यश प्राप्त ग्रंथ का नाम क्या है और उसके ग्रंथकर्ता कौन हैं?
६. रोमनगर की ही तरह दक्षिण भारत में सात पहाड़ों पर निर्मित नगर का नाम क्या है?
७. वज्र आम्ल में नहीं गलते । तो फिर कैसे गलते हैं?
८. हमारे देश में एक राष्ट का नाम पहाड़ी जाति पर रखा गया है । वह कौन-सा राष्ट्र है?
९. विक्रमादित्य के दरबार में नवरत्न के नाम से सुप्रसिद्ध नौ बुद्धिशाली व्यक्ति कौन हैं?
१०. चीन के सम्राट के दरबार में आसीन यूरोप का अधिकारी कौन है? वह सम्राट कौन है?
११. 'करुनाडु' किस प्रांत को कहते थे ।
१२. 'वायुयान' के नमूने को रूप देनेवाला पहला व्यक्ति कौन था?
१३. 'नायनमार' 'आल्वार' इन दोनों में अंतर क्या है?
१४. अंग्रेज़ों ने कलकत्ता में जो किला बनाया, उसका नाम क्या है?
१५. लोटे के पानी में ''लोहे का टुकड़ा' जब गलता है, तो तब क्या उसके पानी का स्तर बढ़ता है?

उत्तर

१. राजकुमारी शांता, ऋष्यश्रृंग नामक मुनि से ।
२. इंग्लैंड का जेम्सगिब । १८८८ वें साल में ।
३. मध्यप्रदेश की राजधानी है भोपाल । भोजपाल नामक एक तालाब से उसका यह नाम पड़ा है ।
४. लगभग ७० प्रतिशत ।
५. तिरुक्कुरल तिरुवल्लुवर ।
६. तिरुवनंतपुरम । तिरु-अनंत-पुर. 'अनंत' नामक आदिशेष के पर्वत पर निर्मित नगर ।
७. तीव्र उष्णता से ।
८. मिज़ोरं । 'मिजो' का मतलब है पहाड़ी आदमी ।
९. कालिदास, बेतालभट्ट, घरखर्पर, वराहमिहिर, क्षवणक, अमरसिंह, वररुचि, शंकु, धन्वंतरी ।
१०. इटली का मार्कोपोलो, कुब्लाखान ।
११. कर्नाटक ।
१२. सुप्रसिद्ध चित्रकार लियोनार्डो डाविन्सी ।
१३. नायनमार शिवभक्त हैं, आल्वार वैष्णव भक्त हैं ।
१४. विलियम किला १६९६-१७१५ के बीच ।
१५. नहीं बढ़ता ।

ज्ञानी-बुद्धिमान

बहुत पहले प्रतीहार नगर में तीन दोस्त थे। उनके नाम थे, सूर्यमित्र, चंद्रशेखर, चंदनमिश्र। वे बचपने से ही निकट दोस्त थे। तीनों ने शिक्षा एक ही गुरु के पास पायी थी, इसलिए उन लोगों की मित्रता दिन-ब-दिन गाढ़ी होती गयी। तीनों में से चंद्रशेखर बुद्धिमान था। वह अपने अन्य दोनों दोस्तों की पढ़ाई में सहायता भी पहुँचाता था।

वे आपस में हमेशा यही कहा करते थे कि जीवन में हम कभी नहीं बिछड़ेंगे, साथ रहेंगे और साथ मरेंगे। उन तीनों की दोस्ती देखकर अध्यापक विद्यार्थियों से कहा करते थे कि दोस्ती का यह आदर्श उदाहरण है।

इस तरह दिन गुज़रते गये और तीनों मित्र उम्र में बड़े भी हो गये। उनकी शिक्षा भी पूरी हो गयी। केवल चंद्रशेखर ही सोचता रहता था कि उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए कहाँ जाऊँ और कैसी शिक्षा प्राप्त करूँ? बाक़ी दोनों इसके बारे में रत्ती भर भी सोचते नहीं थे। चंद्रशेखर अपने माता-पिता का इकलौता बेटा था, इसलिए उसे कहीं भेजने से उन लोगों ने साफ़-साफ़ इनकार कर दिया।

एक दिन शाम को वे तीनों आम के बग़ीचे में सैर करने निकले। तब टहलते हुए चंद्रशेखर ने उनसे कहा "हमारे भविष्य के बारे में मैंने एक उपाय सोचा है।"

'वह क्या है?' बाक़ी दोनों ने बडी उत्सुकता से पूछा। "मेरा विश्वास है कि भाग्यवान वही है, जो अपने लिए सही मौक़े ढूँढता हो। हम नौकरी करेंगे तो कुएँ में मेंढ़क की तरह की ज़िन्दगी गुज़ारेंगे। संसार के शेष कार्यकलापों से हमारा कोई संबंध नहीं होगा। इसलिए हमें कोई ऐसे कार्यों की खोज करनी है, जिनसे हम जीवन में आगे बढ़ सकें।"

तुम लोगों को याद है ना कि हमने बचपन

में प्रतिज्ञा भी की थी कि जो भी करेंगे, मिलकर करेंगे । उस प्रतिज्ञा को कार्यरूप देने का अब समय आ गया है ।"

सूर्यमित्र और चंदन मिश्र ने उससे पूछा "दोस्त, थोड़ा और सविस्तार बताओ कि ऐसे कौन-से कार्य हैं?"

"तो सुनो । हमारे प्रतीहार नगर में और पड़ोस के प्रदेशों में सुपारी और खोपर (नारियल) बहुत बडी मात्रा में उपलब्ध होते है । हमें जो सुगंधद्रव्य चाहिये, वे हमारे प्रदेश में नहीं मिलते । गंडसा और माल्व द्वीपों से ये सुगंधद्रव्य लाये जाते हैं और हमें अधिक दाम में बेचे जा रहे हैं । मैने सुना है कि उन द्वीपों में हमारी सुपारी और खोपर की बहुत बड़ी मांग है । इसलिए मेरा सुझाव है कि हम पर्याप्त मात्रा में पूँजी लगायेंगे और सुपारी व खोपर खरीदकर गंडसा व माल्व द्वीपों में जाकर व्यापार करेंगे ।" यों उनको चंद्रशेखर ने सविस्तार अपनी योजना बतायी ।

चंद्रशेखर के दोनों दोस्तों ने संशय प्रकट किया "क्या हम यह व्यापार कर पायेंगें?"

"क्यों नहीं? थोड़ी-सी पूँजी लगायेंगे और व्यापार शुरू करेंगे । आरंभ में अवश्य ही मुश्किल-सा लगेगा, लेकिन धीरे-धीरे हम सफल होते जाएँगे" दोस्तों को धीरज बंधाते हुए चंद्रशेखर ने कहा ।

इस प्रस्ताव को लेकर बहुत देर तक चर्चा होती रही । फिर सूर्यमित्र और चंदनमिश्र ने बड़े उत्साह से अपनी स्वीकृति दी । चंद्रशेखर ने अपने माता-पिता को यह कहकर मना लिया कि चूँकि मेरे साथ मेरे मित्र भी होंगे, इसलिए आप लोगों को घबरांने की ज़रूरत नहीं ।

तीनों मित्र अपना-अपना माल लेकर पहली बार गंडसा द्वीप पहुँचे । वहाँ विदेशी व्यापारियों के लिए एक खास सराय थी, जहाँ वे तीनों ठहरे ।

चंद्रशेखर ने कहा "कल सबेरे ही हम तीनों नगर के अलग-अलग प्रदेशों में जाएँगे और अपने व्यापार का श्रीगणेश करेंगे ।"

दोनों मित्रों ने सिर तो हिला दिया पर अंदर ही अंदर वे ड़र रहे थे । दूसरे दिन सबेरे तीनों अलग-अलग, नगर के विभिन्न

प्रदेशों में गये और अंधेरा होते-होते सराय लौटे । चंद्रशेखर ने देखा कि उनके चेहरे में कोई उत्साह ही नहीं है तो उनसे पूछा "ऐसे क्यों मुँह लटकाये हुए हो?"

"पहले ही दिन से व्यापार में ठोकर खाना शुरू हो गया है । हमारे व्यापार की पद्धति को देखकर एक-दो ने हमसे प्रश्न किया कि क्या व्यापार में नये-नये आये हो? वे हमारी हालत पर हँस भी पड़े ।" दोनों मित्रों ने चंद्रशेखर से बताया ।

फिर दोनों ने चंद्रशेखर के व्यापार के बारे में प्रश्न किया । चंद्रशेखर अपने दोस्तों से कहने से सकुचा रहा था, क्योंकि उसे लगा कि सुनने के बाद अवश्य ही वे दुखी होंगे । फिर भी उसने सच बताना अपना धर्म समझा और यों बताया ।

उस दिन दुपहर तक चंद्रशेखर का आधा माल बिक गया । अपने अंदाज़े से भी अधिक लाभ उसे मिला । यही नहीं, सिंहल, कश्मीर जैसे और दूसरे प्रांतों से आये हुए व्यापारियों से भी उसका परिचय हुआ । उन लोगों ने दूसरे दिन उसे अपने यहाँ भोज के लिए भी दावत दी ।

यह जानते ही दोनों दोस्तों के चेहरे फ़ीके पड़ गये । बाद, तीन-चार दिनों में चंद्रशेखर का पूरा माल बिक गया । तब तक सूर्यमित्र और चंदनमिश्र का आधा माल भी बिक नहीं पाया । चंद्रशेखर ने उस माल को भी बेचने का जिम्मा अपने ऊपर लिया और उन्हें बेचने में कामयाब भी हुआ । इससे उन्हें फ़ायदा भी हुआ ।

उसकी सलाह पर तीनों मित्रों ने वहाँ उपलब्ध सुगंध द्रव्यों को भी खरीदा । अलावा इसके, विदेशी व्यापारियों से विचित्र वस्तु व गृह अलंकार की सामग्री भी खरीदी ।

इस प्रकार जब व्यापार का काम पूरा हो गया, तब तीनों दोस्त प्रतीहार नगर लौटने की तैयारियाँ करने लगे ।

लौटने के पूर्व वे तीनों गंडसा द्वीप इस में स्थित भगवान चेन्नकेशव का मंदिर देखने गये । इस द्वीप के लोग इस भगवान की पूजा करते हैं । यह मंदिर एक पहाड़ी पर है, जिसके पिछले भाग में पहाड़ी को छूती हुई गंडकी नदी प्रवाहित होती रहती है । पहाड़ी के अंत में एक बग़ीचा है, जहाँ भगवान

था, इसलिए उसे भारी नुकसान हुआ । इस अपमान को वह सह नहीं सका और उसने आत्महत्या कर ली । उस देश के कानून के मुताबिक उसका माल गंडसा के शासक ने अपने स्वाधीन कर लिया" वे रोते जाते और चंद्रशेखर के माँ-बाप को यह झूठी कहुनी सुनाते जाते । उनको विश्वास हो गया कि अब उनका बेटा जीवित नहीं है ।

परंतु वास्तव में कुछ और ही हुआ । चंद्रशेखर जब पहाड़ी के ऊपर से ढ़केला गया था तब गंडकी नदी में जाकर नहीं गिरा बल्कि पहाड़ी के नीचे बरगद का जो पेड़ है, उसकी डालियों में फँस गया । वह बेहोश हो गया और सूर्यास्त के समय ही होश में आया । होश आते ही उसने चिल्लाना शुरू किया "बचाओ, बचाओ"

उस समय भगवान चन्नकेशव के मंदिर के धर्मकर्ता मंदारक की पुत्री स्वर्णगौरी अपनी परिचारिकाओं के साथ उस बग़ीचे में थी । चंद्रशेखर की चिल्लाहट सुनकर स्वर्णगौरी ने नीचे झाँककर देखा कि एक आदमी पेड़ की डालियों के बीच फँसा हुआ है तो उसने तुरंत आदमी बुलवाये और रस्सियों की सहायता से उसे ऊपर खिंचवाया ।

जब चंद्रशेखर बग़ीचे में लाया गया तब, फिर से वह बेहोश हो गया । अपने नौकरों की सहायता से स्वर्णगौरी उसे अपने घर ले आयी । उसकी सेवा-शुश्रूषा की ।

मंदारक ने चंद्रशेखर को देखकर अपनी बेटी से कहा "बेटी, यह प्रतीहार नगर से

की पूजा के लिए फूल उगाये जाते हैं । उस सुँदर बग़ीचे को देखने के बहाने दोनों दोस्त चंद्रशेखर को वहाँ ले आये । जब चंद्रशेखर पहाड़ी के ऊपर से नीचे झाँक रहा था तो दोनों दोस्तों ने पीछे से उसे गंडकी नदी में ढ़केल दिया और चुपचाप वहाँ से खिसक गये ।

सराय पहुँचने के बाद उन दोनों ने चंद्रशेखर का धन व अन्य सामग्री आधा-आधा बाँट लिया । थोड़े दिनों के बाद वे दोनों प्रतीहार नगर लौटे ।

चंद्रशेखर के माँ-बाप बड़ी बैचैनी से अपने बेटे की राह देख रहे थे । सूर्यमित्र और चंदनमिश्र दोनों उनके पास गये और उन्हें एक झूठी कहानी सुनायी । उन्होंने कहा "चद्रशेखर को व्यापार करना नहीं आता

आया हुआ व्यापारी है। इसका नाम चंद्रशेखर है। मैने इससे कुछ माल खरीदा भी था। मैं इसकी होशियारी और ईमानदारी पर बहुत ही प्रसन्न हुआ, इसलिए मैंने इसे कुछ पुरस्कार भी दिये"। चंद्रशेखर को देखकर वह बहुत ही चकित भी हुआ।

थोड़ी देर के बाद चंद्रशेखर होश में आया, और गंडसा द्वीप के प्रमुख व्यापारी मंदारक को अपने पास देखकर आश्चर्य में डूब गया।

मंदारक ने बड़े ही प्रेम से उसका कुशल-मंगल पूछा और पूछा कि ऐसा क्यों और कैसे हुआ है? चंद्रशेखर पहले पूरा विवरण देने के लिए हिचकिचा रहा था, परंतु बाद एक-एक करके, जो हुआ, सब कुछ बताया।

पूरा सुनने के बाद क्रोधी मंदारक ने कहा "मित्रद्रोह की यह चरमसीमा है। हो सकता है, अब भी तेरे वे द्रोही दोस्त शहर में ही हों। अभी सैनिकों को लेकर जाऊँगा और उन्हें गिरफ्तार करूँगा।"

परंतु शांत चंद्रशेखर ने कहा, "हाँ, उनको गिरफ्तार करना आसान बात है, परंतु मेरे मतानुसार ऐसा करना उचित नहीं होगा। अलावा इसके, जिन लोगों ने मुझे मारने की योजना बनायी है, वे कभी के यहाँ से चले गये होंगे। शायद मेरा धन और माल लेकर रफ़ूचक्कर हो गये होंगे।"

मंदारक ने सर तो हिला दिया, पर उसे संदेह था, इसलिए उसने पूछा "इतना सब कुछ हुआ है, फिर भी क्या तुम उनसे अपनी मित्रता बनाये रखना चाहते हो?"

इसपर चंद्रशेखर हँसा "ऐसी कोई बात नहीं। उन लोगों ने जो किया, उसपर मुझे बड़ा ही खेद हो रहा है। अब उनको पकड़कर उनपर दोषारोपण करना और उनको सज़ा दिलवाना, रास्ते में जाते हुए भिखमंगों को पकड़कर उनसे रार मोल लेने के समान होगा। मुझे यह कतई पसंद नहीं। मैं ज्ञानी नहीं हूँ, बुद्धिमान हूँ। इसलिए ज्ञानी की तरह उन्हें क्षमा करके नहीं छोड़ नहीं सकता। बुद्धिमान की तरह उनसे बदला लूँगा। अगर आप मुझे चाहते हों तो थोड़ी सी रकम कर्ज़ में दीजिये। फिर से व्यापार करूँगा और ब्याज सहित रकम वापस करूँगा।"

चंद्रशेखर की बातों में सच्चाई और ईमानदारी थी। मंदारक उसकी इन बातों से उसपर मुग्ध हुआ और कुछ बताने ही जा रहा था कि सब कुछ सुनती हुई स्वर्णगौरी ने कहा "पिताजी, ज़रा मेरी बात सुनिये" कहती हुई अपने पिता को बग़ल के कमरे में ले गयी।

थोड़ी देर बाद मंदारक अकेले ही लौटा और बोला "मेरी बेटी किसी भी हालत में कर्ज़ के रूप में तुम्हें रकम देने से मना कर रही है।"

चंद्रशेखर पर इन बातों का कोई असर नहीं हुआ। वह मौन रह गया। मंदारक ने ही हँसते हुए फिर से कहा "वह चाहती है कि तुम इस घर के दामाद बनो। फूटी कौड़ी सहित तुम्हें ही सब कुछ सौपने को कह रही है। मेरा तो कोई बेटा है नहीं, तुम्हीं इस घर का दामाद बनो तो अच्छा होगा। इससे मुझे बेहद ख़ुशी होगी।"

"अपना निर्णय सुनाने के पहले एक बात आपसे कहना चाहूँगा। मेरे माँ-बाप, बंधू सब प्रतीहार नगर में हैं। उनसे भी अधिक मैं अपनी मातृभूमि को चाहता हूँ। इसलिए आपके यहाँ रहकर आपके व्यापार की देख-भाल करना असंभव है" चंद्रशेखर ने अपना निश्चय स्पष्ट बता दिया। उसके इस उत्तर से मंदारक बहुत ही तृप्त हुआ। कहा "तुम यह भूल रहे हो कि मेरी बेटी ने तुम्हारे इस स्वाभिमान को ही बहुत पसंद किया है। जैसा तुम चाहते हो, वैसा ही करो। तुम्हारी ही इच्छा के मुताबिक़ हम ही तुम्हारे साथ तेरे स्वदेश चलेंगे। 'ना' तो नहीं कहोगे ना?"

इसके कुछ दिनों के बाद चंद्रशेखर और स्वर्णगौरी का विवाह बड़े वैभव से संपन्न हुआ।

एक शुभ दिन पर चंद्रशेखर अपनी पत्नी और ससुर को लेकर प्रतीहार नगर पहुँचा।

चंद्रशेखर के माँ-बाप ने कभी कल्पना भी नहीं की थी कि वे बेटे को फिर से देख पायेंगे। अब बेटे को पत्नी समेत देखकर वे हर्ष से विभोर हो गये। लेकिन चंद्रशेखर क्या लौटा, सूर्यमित्र और चंदनमिश्र पर मानों बिजली गिर पड़ी। सब परिचित लोग उसके लौटने पर चकित थे। उससे मिलकर

वे प्रश्न पर प्रश्न करते गये ।

चंद्रशेखर ने सबके प्रश्नों का एक ही उत्तर दिया "कृपा करके मुझसे और विवरण पूछकर मुझे संकट में मत डालिये । मैं सिर्फ़ इतना ही कह सकता हूँ, ईर्ष्यालू व्यक्तियों के भयंकर षडयंत्रों से रक्षा करनेवाले हमारे कुलदैव स्वयंभूस्वामी का मैं बहुत ही आभारी हूँ। उनका मैं सदैव कृतज्ञ हूँ।" लोग चंद्रशेखर की बातों का तरह-तरह से अर्थ निकालने लगे ।

वे कहने लगे "चंद्रशेखर अपने दोस्तों से अधिक अक़्लमंद है । व्यापार में पर्याप्त लाभ कमाया होगा, इससे दोनों दोस्तों में उसके प्रति ईर्ष्या पैदा हुई होगी और उन्होंने उसे मार डालना चाहा होगा । यही कारण होगा, इसीलिए उसके दोनों दोस्त उसके आगमन पर खुश नहीं हैं । चंद्रशेखर भी उनसे विमुख ही रह रहा है ।"

इस प्रकार सूर्यमित्र, चंदन मिश्र की हालत उस धोबी के कुत्ते के समान हुई, जो ना घर का, ना घाट का ।

मंदारक ग़ौर से यह सब कुछ देख रहा था । उसने एक दिन चंद्रशेखर से पूछा "चंद्रशेखर, तो तुमने अपने दोस्तों से बदला ले लिया?"

चंद्रशेखर ने कहा "ससुरजी, दुनिया अच्छाई से ज्यादा बुराई को जल्दी से, होशियारी से और नैपुण्य से परख लेती है । एक छोटी-सी बात बोलकर, उन दोनों की बदमाशी का पर्दाफ़ाश किया है मैंने और दुनिया यह ताड़ गयी है । यह तो एक तरह से बदला लेना ही हुआ है ना?"

मंदारक ने तृप्त होकर कहा "हाँ, तुमने कहा था कि एक ज्ञानी की तरह मैं उन दोनों को क्षमा नहीं कर सकता बल्कि एक बुद्धिमान की तरह उनसे बदला लूँगा और तुमने बड़ी आसानी से यह कर दिखाया । मैं तुम्हारी इस जीत पर तुम्हें बधाई देता हूँ ।"

चंदामामा की खबरें

लंबा दिन

पिछले जून ३० जुलाई की आधी रात को, जब हम सब लोग बेसुध सोये हुए थे, तब दिल्ली के 'नेशनल लाबरेटरी' के वैज्ञानिक जागे हुए थे। उस प्रयोगशाला की 'अटामिक क्लाक' के एक सेकंड को वह ठीक करना चाहते थे, इसलिए उन्हें जागते रहना पड़ा। उनके हिसाब से उस दिन भूभ्रमण के वेग में एक सेकेंड घटता है। अगर

वह अब ठीक नहीं किया गया तो 'अस्टानामिकल टाइम' में और हमारे लगाये हुए घड़ियों के समय में दूसरे दिन फरक आ जायेगा। ऐसी ही घटना ग्यारह सालों के पहले-१९७२, जून ३० को एक सेकेंड की ज्यादती हो गयी। परंतु, टी. वी को देखते हुए अपनी घड़ियों को ठीक करनेवाले हम इसका ध्यान नहीं रखते हैं ना?

भूमि विनाश से बच गयी।

६००० टनों का भारीपन लिये नक्षत्र के आकार में एक छोटा-सा ग्रह, मई बीस को घंटे में ४८,००० मील के वेग से भूमि की तरफ तेज़ी से चला आ रहा था। जब वह भूमि से ९०,००० मील की दूरी पर था, तब दूसरे मार्ग में आगे बढ़ गया। सौभाग्य की बात है कि भूमि उससे टकटाने से

बाल-बाल बच गयी। अगर ऐसा ना होता तो भूमि को बृहत रूप में क्षति पहुँचती। अमरीका के दो अंतरिक्ष-वैज्ञानिकों ने यह सनसनी ख़बर वैज्ञानिकों का सुनायी। अंतरिक्ष के 'आस्टिरायड्स' को खोजना ही इन काम है।

अंतरिक्ष में नूतन विजय

'एँडवर' नामक एक विलक्षण व्योम-जहाज़ जून २१ को अंतरिक्ष में, अमरीका से भेजा गया। वह ५६ वाँ अंतरिक्ष जहाज़ है। उसमें पाँच व्योमगामी हैं। उनमें से चार व्योयगामियों ने निकलने के पाँचवें दिन अंतरिक्ष में क़दम रखा। यूरोपियन रिसर्च शाटलैट 'युरेका' इससे छह महीने पहले ही अंतरिक्ष में पहुँच चुका था। उन्होने उसे खोज निकाला और 'एँडवर' को उससे जोड़ दिया। 'युरेका' गत छह महीनों से विविध प्रकार की खोजों के परिणामों का समीकरण करके भेज रहा है।

जांबवान, हनुमान, वेगदर्शी, ऋषभों ने सुग्रीव के आज्ञानुसार कलश लिये और पाँच सौ नदियों का पानी ले आये। चारों समुद्रों का पानी भी ले आये।

उपरांत शास्त्रीय पद्धति में श्रीराम का राज्याभिषेक हुआ। राम और सीता को रत्नखचित सिंहासन में आसीन किया। उपरांत ऋत्विक, ब्राह्मण, नागरिक व योद्धाओं ने, एक के बाद एक ने, राम का अभिषेक किया।

शत्रुघ्न ने राम के लिए श्वेत छतरी पकड़ी। सुग्रीव चवँर हिलाता रहा। विभीषण भिन्न प्रकार का चँवर हिलाता रहा।

अपने राज्याभिषेक के इस शुभ संदर्भ पर राम ने ब्राह्मणों को बछड़े सहित गायें, सोना व वस्त्र भी दान में दिये। उसने सीता को एक श्रेष्ठ मोतियों का हार दिया और कहा "वानरों में सबसे अधिक जिनपर तुम्हें स्नेह है, उसे इसे भेंट में दो।" सीता ने तक्षण ही वह हार हनुमान को दिया।

विभीषण लंका लौट गया। राम ने भरत को युवराज बनाया और राज्य का शासन करने लगा। उसने एक दिन सुमंत को बुलाया और कहा "जनता के हितों के कार्य, मैं बहुत ही बडे स्तर पर करने की इच्छा रखता हूँ। इन सत्कार्यों को पूर्ण करने के लिए बड़ी मात्रा में धन की आवश्यकता है। आप इस धन को इकट्ठा करने के प्रयत्नों में जुट जाइये।"
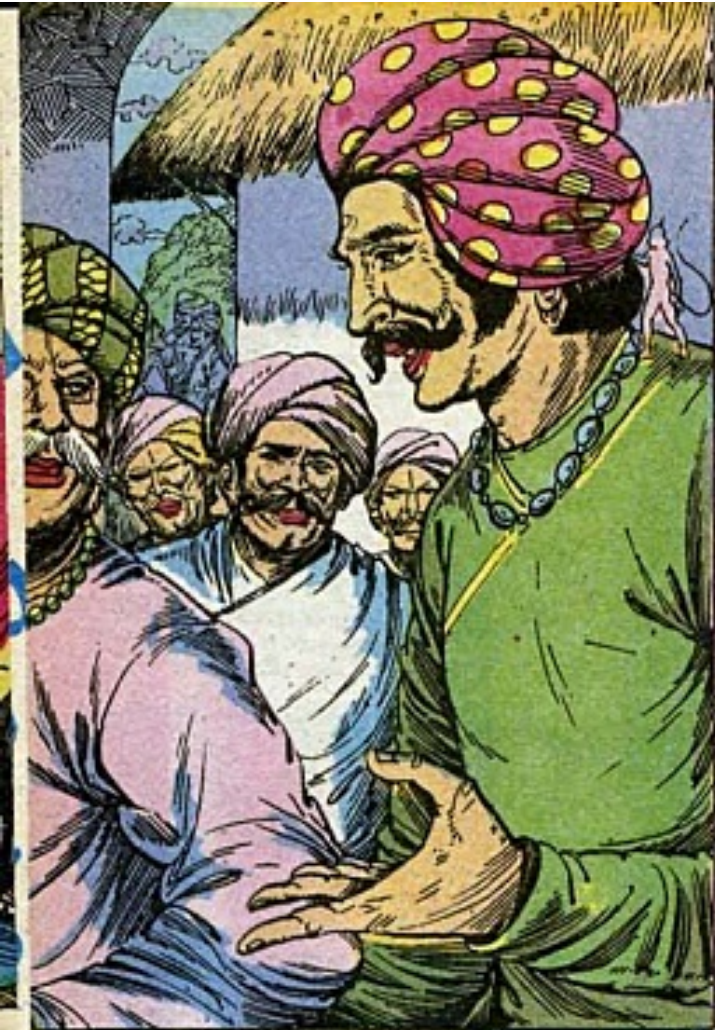
"प्रभू, पिछले चौदह सालों से जनता को जो कर चुकाने थे, उन्होने नहीं चुकाया" सुमंत ने कहा ।

राम ने दुखी होते हुए कहा "इसका अर्थ यह हुआ कि समय पर वर्षाएँ नहीं हुईं । अभागी जनता को कई कष्टों का सामना करना पड़ा ।"

एक क्षण के लिए सुमंत मौन रहा और फिर बोला "ऐसी कोई बात नहीं प्रभू, देश शश्यश्यामल है । जनता को किसी भी वस्तु की कमी नहीं हुई । परंतु हाँ, जनता में ही परिवर्तन आ गया है । धनिक व्यापारियों को जो कर चुकाने थे, नहीं चुकाया । किसानों ने भी यही किया । इससे धनिक और धनी हो गये । दरिद्र और दरिद्र होते गये ।"

"ऐसा क्यों हुआ? भरत ने इसपर क्यों कोई कार्रवाई नहीं की? वह चुप क्यों रह गया?" राम ने थोडा-सा क्रोध जताते हुए पूछा । "प्रभू, उन्होंने राज्य-पालन किया ही कब था? आपकी पादुकाओं की पूजा करते हुए चौदह साल बिता दिये उन्होंने । उनकी मासूमियत का लाभ उठाया लोगों ने । उनके सम्मुख आपके नाम का कीर्तन करते तो वे फूले ना समाकर उन लोगों को पर्याप्त धन भेंट में देते थे । जब उनको याद दिलाया जाता कि आप शासक हैं और आपके कुछ कर्तव्य भी हैं तो वे कहते कि कर चुकाने के लिए जनता पर किसी भी प्रकार का दबाब मत ड़ालिये । आख़िर वे मेरे अग्रज श्रीराम के नागरिक ही तो हैं ।" सुमंत इतना ही कहकर चुप हो गया । फिर सुमंत ने कहा "मै तो केवल उनकी आज्ञा का पालन करनेवाला अधिकारी मात्र हूँ । उनकी आज्ञा के विरुद्ध भला मैं क्या कह पाऊँगा । उनकी आज्ञाएँ मेरे लिए शिरोधार्य हैं ।"

पूरी बात राम की समझ में आ गयी । सुमंत जब कह रहा था कि मैं इस स्थिति में क्या कर सकूँगा, तब लक्ष्मण वहाँ आया ।

सुमंत ने लक्ष्मण को भी सविस्तार समझाया कि खज़ाना क्यों खाली हो गया है और धन का अभाव क्यों हो गया?

लक्ष्मण सोच में पड़ गया और फिर कहा "तो मेरी एक बात को मानिये और एक काम कीजिये । राज्य-भर में घोषणा करवा दीजिये कि जिन-जिन लोगों को, सरकार को

कर चुकाना है, वे कुम्हड़े के वज़न का सोना दें तो काफ़ी है । मैं आपको आश्वासन देता हूँ कि इस पद्धति को अपनाने से जनता को किसी प्रकार की हानि नहीं पहुँचेगी ।" राम ने इसके लिए अपनी स्वीकृति दी । उसी दिन कोसल राज्य में मुनादी पिटवयी गयी । लक्ष्मण जानता था कि चौदह सालों से जिस जनता ने कर नहीं चुकाया, वे कम्हड़े का क्या? हाथी के सिर के अनुपात का सोना भी देने के लिए सन्नद्ध होंगे । फिर भी लक्ष्मण ने आवश्यक जागरूकता बरतने के उद्देश्य से हनुमान को बुलाया और कहा "तुम जनता में घुल-मिल जाओ । वे जान ना पाएँ कि तुम उनके बीच में हो । तुम मालूम करो कि हमने जो मुनादी पिटवायी, उसपर उनकी क्या टिप्पणियाँ हैं? यह भी जानो कि क्या वे हमारी इस घोषणा से असंतृप्त हैं?"

सूक्ष्म रूप में हनुमान जनता के बीच में गया और उनकी सब बातें ध्यान से सुनीं, जो परस्पर कर रहे थे । वह लौटा और लक्ष्मण से बोला "कुम्हड़ा जितना सोना देने में किसी को कोई आपत्ति नहीं, उल्टे वे आपस में बात कर रहे थे कि राम भोला है । इतनी लंबी अवधि तक उन लोगों ने कर नहीं चुकाया, फिर भी कुम्हड़ा जितना ऊँचा और वज़नदार है, उतना ही सोना देने के लिए कहा गया है, इसपर वे अत्यंत संतुष्ट भी है ।"

हनुमान की बातें सुनने के बाद लक्ष्मण
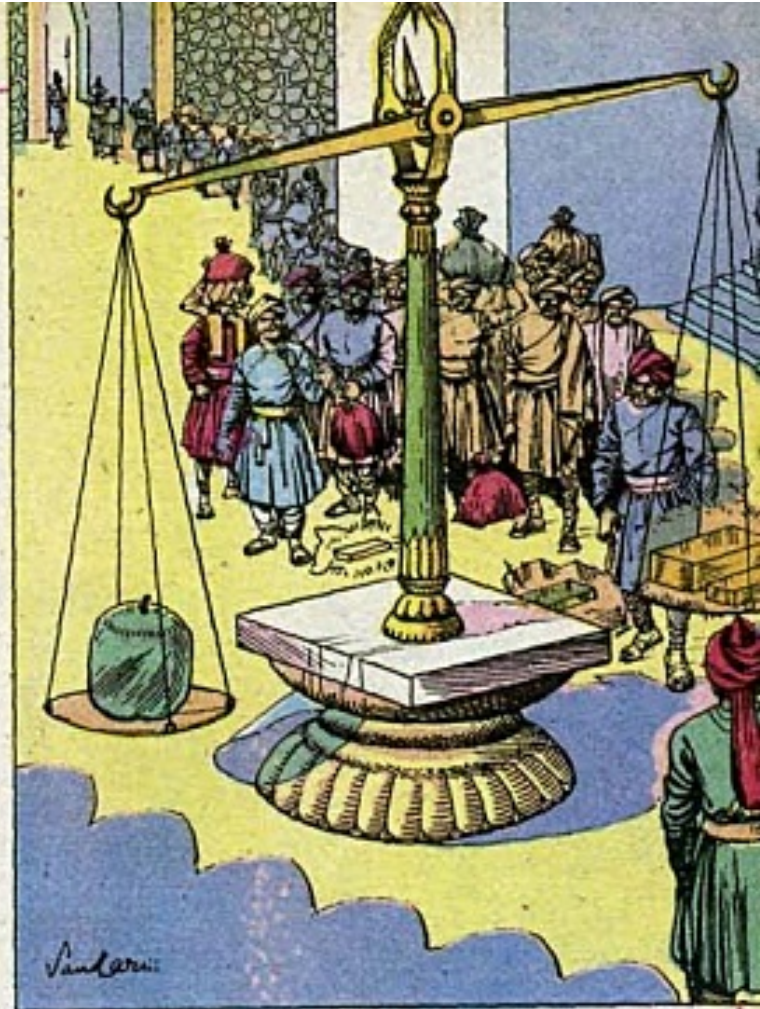
को एक संदेह हुआ । जनता में कुछ लोग तो अवश्य ही ईमानदार और पाप से भयभीत होनेवाले धर्मात्मा तो होंगें ही । ऐसे लोगों के प्रति अन्याय नहीं होना चाहिये । उन लोगों को अवश्य ही दुखी नहीं करना चाहिए, जिन्हें कुम्हड़े के वज़न से कम सोना देना होगा ।

लक्ष्मण ने इस समस्या के हल पर बहुत सोचा-विचारा । उसे एक उपाय सूझा । वह हनुमान को लेकर अयोध्या के मंदिरों में गया । मंदिर में थोड़ी देर ठहरकर सूक्ष्म रूप में परिवर्तित हनुमान से लक्ष्मण ने धीरे-धीरे बातें की और दोनों बाहर आये । उस समय तक सूर्यास्त हो गया था और अंधेरा भी छा गया था ।

प्रातःकाल राजभवन के प्रांगण में उन्होंने एक बड़ा तराज़ू लटका दिया। एक पलड़े में उन्होंने एक साधारण कुम्हड़ा रखवाया। प्रजा सोना गठरी में बाँधे वहाँ आयी। उनमें से एक व्यक्ति, जो सोना अपने साथ लाया था, पलड़े में रख दिया। कुम्हड़ा जिस पलड़े में था, वह ऊपर नहीं उठा। उसे इसपर बहुत ही आश्चर्य हुआ। अपना सर खरोंचता हुआ वह अपने घर दौड़ा और अधिक सोना लेकर वापस लौटा। उसने जब वह सारा सोना पलड़े में रखा तभी जाकर वह पलड़ा ऊपर उठा। अब दोनों पलड़े समान थे। यह देखने के बाद लोग अपने-अपने घर गये और अधिक सोना ले आये।

वहाँ इकट्ठे लोगों में से एक ने ड़रता हुआ, थोड़ा-सा सोना, जो उसके पास था, पलड़े में रखा। उस थोड़े से सोने मात्र से पलड़ा भारी हो गया, और कुम्हड़ा रखे हुए पलड़े से ऊपर उठा, जिसे देखकर लोगों को बहुत ही आश्चर्य हुआ।

इसके बाद और बहुत लोगों ने तराज़ू में सोना रखा। तभी वे समझ पाये कि यह तराज़ू कोई साधारण तराज़ू नहीं है बल्कि बहुत ही महिमावान है। न्याय-संगत जितना उसे प्राप्त होना चाहिए, उसे वह ग्रहण करता है। प्रजा उसके इस न्याय से बहुत ही संतृष्ट हुई और आनंद से जितना उनको देना था, दे दिया। इस प्रकार काफ़ी मात्रा में सोना लब्ध हुआ। अब खज़ाना भर गया।

जो हुआ, उसे देखकर राम चकित हुआ। उसने लक्ष्मण और मंत्री सुमंत को अपने रहस्य-कक्ष में बुलवाया। उन्हीं के पीछे-पीछे हनुमान ने भी अपने सूक्ष्म रूप में प्रवेश किया।

"लक्ष्मण, कुम्हड़े का भारीपन अधिक से अधिक कितना होगा? पर वह तो मनों के बराबर तुला है। यही नहीं, कुम्हड़े ने तो विविध प्रकार के भारीपन दिखाये। तुम सब लोगों ने मिलकर प्रजा को वंचित किया है। है ना?" राम ने कड़े स्वर में पूछा।

लक्ष्मण ने हाथ जोड़े राम से कहा "इसमें कोई धोखा नहीं है। जो भी हुआ, धर्मदेवता के आदेशानुसार हुआ है। हाँ, इसमें हनुमान का थोड़ा-सा परिश्रम अवश्य है। तराज़ू के मध्य भाग को हनुमान ने अपने सूक्ष्म

रूप में पकड़े रखा है। धर्मदेवता का जब तक आदेश नहीं होता, तब तक उस पलड़े को पैर से दबाये रखा, जिसे ऊपर उठना हो या नीचे ही रहना हो।

धर्मदेवता को जो कहना था, वह केवल हनुमान ही सुन पाता था। मैंने और हनुमान ने धर्मदेवता की पूजा की और उनसे इस प्रकार का सहयोग पाया। प्रजा में कुछ ही ऐसे हैं, जिन्होंने अपने धर्म को ठीक तरह से निबाहा है और कर जमा किया है। वे ही अधिक मात्रा में हैं, जिन्होंने कर नहीं चुकाया। हमने धर्मदेवता की सहायता से ख़ज़ाने को न्यायपूर्वक जो मिलना था, प्राप्त किया। हमने बहुत सोच-विचार करके ही इस योजना को कार्यान्वित किया।"

राम कुछ कहने ही वाला था कि इतने में धर्मदेवता की अशरीर वाणी प्रतिध्वनित हुई "राम, लक्ष्मण ने जो कहा, सब सत्य है।" तुरंत हनुमान भी अपने सूक्ष्मरूप से निजरूप में प्रकटित हुआ और राम को प्रणाम किया। राम ने हनुमान की बहुत ही प्रशंसा की।

इसके कुछ दिनों बाद राम ने कोसल राज्य की जनता को एक भारी दावत दी। उस दावत के लिए जो सामग्री चाहिये और जिन-जिन प्रबंधों की आवश्कता है, उसका सारा आयोजन हनुमान ने ही किया। एक क्षण की भी उसे फुरसत नहीं रही। उसने राम के इस प्रबंध को सफल बनाने में कोई कसर नहीं रखी।

सीता ने देखा, हनुमान कितना परिश्रम कर रहा है। उसपर उसका पुत्र-वात्सल्य जैसा था। वही प्रथम था, जिसने लंका में उसको ढूँढ़ निकाला। उसने हनुमान को अपने पास बुलाया और कहा "पुत्र हनुमान, सुबह से एक क्षण का भी विश्राम लिये बिना परिश्रम कर रहे हो। भोजन का समय हो गया है। अतिथियों के सत्कार में कोई त्रुटि ना आये, इसकी देखभाल की जिम्मेदारी तुम्हीं पर है। इसलिए अच्छा यही होगा कि उनसे पहले तुम भोजन कर लो।"

हनुमान ने 'हाँ' कहते हुए सीता के पीछे-पीछे रसोई-घर में प्रवेश किया। सीता ने पत्तल बिछाकर उसे परोसना शुरु किया। जो जो वह परोसती, हनुमान तक्षण ही उसे

निगल जाता था। यह क्रम थोड़ी देर तक चलता रहा और देखते-देखते हज़ारों अतिथियों के लिए पकायी गयी भोजन-सामग्री समाप्त हो गयी। चावल, तरकारियों, पकतानों से भरे बरतन खाली हो गये। यह देखकर सीता आश्चर्य में डूब गयी और दौड़ती हुई राम के पास जाकर सब कुछ सुनाया।

राम ने हँसते हुए कहा "तुमने हनुमान को क्या समझ रखा है? परमशिव इस रूप में अवतरित हुआ है। उसे कैसे संतृप्त करना है, यह तुम्हारी शक्ति पर आधारित है। मैं कुछ कर नहीं सकता।"

सीता रसोई-घर वापस आयी और हनुमान के पीछे खड़ी हो गयी। अपने मन ही मन कहने लगी" परमेश्वर, मैं जान गयी हूँ कि तुम कौन हो? कम से कम अब तुम अपनी भूख नहीं त्यागोगे तो हमारी मर्यादा मिट्टी में मिल जायेगी। प्रभू, मेरी रक्षा करो" कहती हुई पंचाक्षरी मंत्र का सौ बार पठन किया।

दूसरे ही क्षण हनुमान ने संतृप्ति से डकार ली। सीता उसके आगे आयी और बोली, "पुत्र, और परोसूँ?"

"नहीं माते, नहीं। पेट भर गया है" कहता हुआ हनुमान रसोई-घर से बाहर निकला।

उसके बाद सीता ने देवी अन्नपूर्णा का स्मरण किया। देवी ने पहले की ही तरह सब बरतनों को पदार्थों से भर दिया। नागरिक और वानर खाने में जुट गये। वानर-पंक्ति के कोने में बैठा एक छोकरा वानर आवले को बडे आश्चर्य से देख रहा था। उसने अपनी उँगलियों से उसे दबाया तो उसका बीज ध्वनि करता हुआ, छलांग मारता ऊपर उठा।

बालक वानर ने उसे देखते हुए कहा "अरे, तू क्या समझता है कि तुझे ही छलांग मारनी आती है? देखो, मेरा कौशल।" कहता हुआ उठ खड़ा हुआ और ऊपर उड़ा। उसे देखकर एक और वानर उससे भी ऊपर उड़ा। तीसरा भी यह देखता रहा और बड़े उत्साह से उससे भी ऊपर उड़ा। इस प्रकार वानर-समूह एक दूसरे से अधिक अंतरिक्ष में उड़ने लगा। अंगद, नील और सुग्रीव
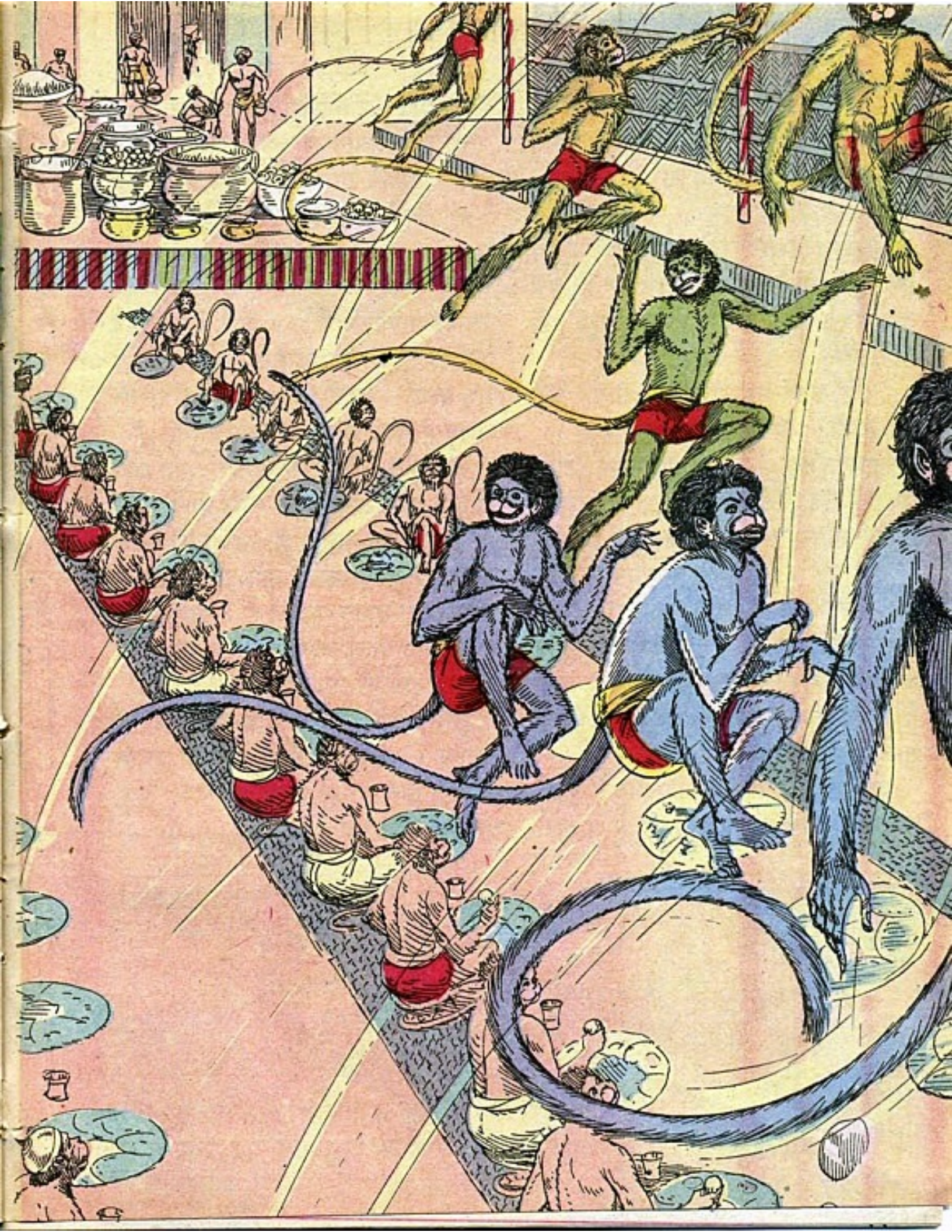
भी उड़े । हनुमान ने सोचा कि शायद राजा की यह आज्ञा होगी । वह भी उड़ा । उसने केवल औपचारिक छलांग मारी ।

वहाँ आये हुए राम ने वानरों के इस कोलाहल को देखा और हनुमान से पूछा "जब कि सब वानर आकाश में उड़ रहे हैं, तब तुम केवल एक छलाँग मारकर चुप क्यों हो गये?"

"राम, इतने महान वीरों के सामने मेरी क्या हस्ती?" विनय से हनुमान ने कहा ।

जांबवंत तब आगे आया और बोला "राम, जब तक कोई दूसरा नहीं बताता, तब तक अपने शक्ति-सामर्थ्य से हनुमान अनभिज्ञ है ।"

राम एक श्वेत कमल हनुमान को देते हुए बोला "हमारे वंश के मूल कारक सूर्यभगवान को यह श्वेत कमल समर्पित करना है । सूर्य को श्वेतपद्मधारी कहा जाता है । उन तक यह पहुँचाने की शक्ति केवल तुम्ही में है ।"

हनुमान 'प्रभू की आज्ञा शिरोधार्य' कहते हुए श्वेत कमल लिये एक छलांग में आकाश में उड़ गया और सूर्य के रथ को पकड़ लिया । उसने सूर्यभगवान से कहा "गुरुदेव, राम ने इसे आपको समर्पित करने के लिए कहा है ।" उसने उस कमल को सूर्य के पैरों में रखा ।

सूर्य भगवान ने हनुमान को 'चिरंजीव' कहकर आशीर्वाद दिया । अपने हाथ में सजे एक श्वेतपद्म को उसे देते हुए कहा "यह राम को दो । इसके प्रभाव से राम के राज्य-पालन के काल में देश सुसंपन्न रहेगा ।"

वह श्वेत-पद्म मुरझाता नहीं । वह जहाँ होता है, वहाँ क्रमानुसार वर्षाएँ होती रहती हैं, फ़सलें खूब फलती हैं । प्रजा को किसी प्रकार की अस्वस्थताएँ नहीं होतीं । संक्षेप में वह एक महान वरदान है । सूर्यभगवान से अनुमति प्राप्त करके हनुमान लौटा और वह पद्म राम को समर्पित किया ।

राम ने आनंदातिरेक से हनुमान को गले लगाया । हनुमान ने सीता-राम को प्रणाम किया । सीता ने उसे आशीर्वाद दिया "पुत्र, तुम चिरंजीवी रहो ।"
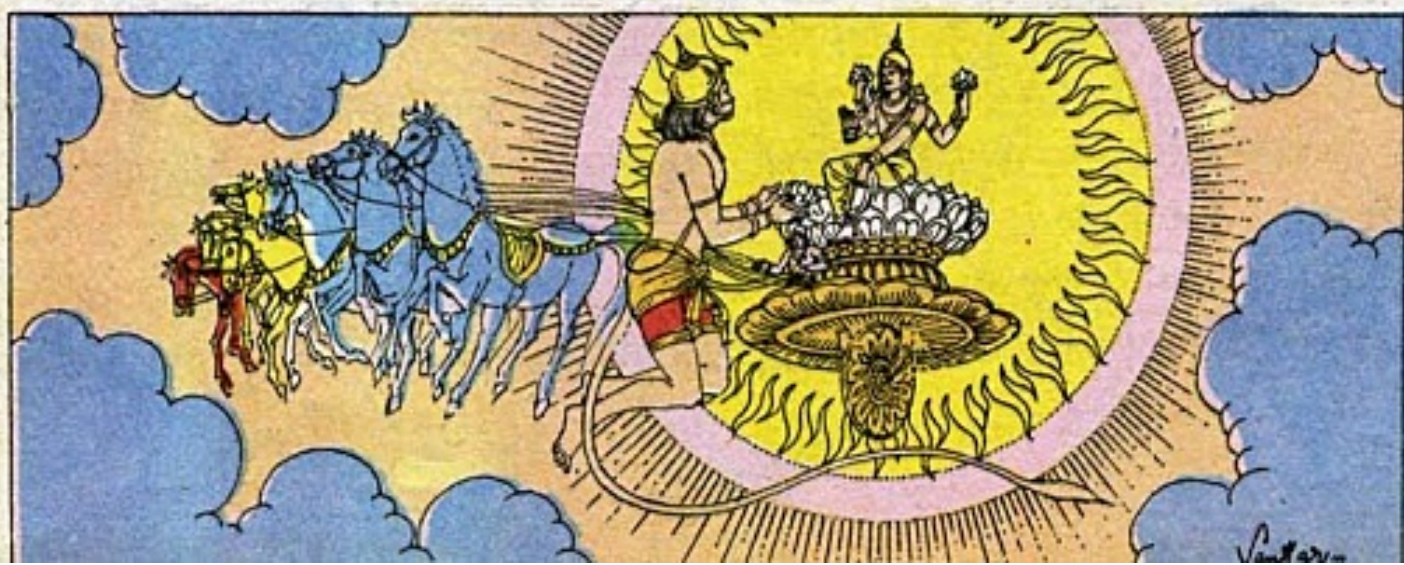
तीसरा साहस

युवक रंजन को साहस-भरे काम करना बहुत पसंद था। अपने घर में वह डींग हाँकता रहता था कि मुझ जैसा वीर, शूर और साहसी कहीं भी, कोई भी नहीं होगा। रंजन के दादा को उसकी ये बड़ी-बड़ी बातें अच्छी नहीं लगती थीं। उसने उससे कहा "देखो, काँसे में जो आवाज़ आती है वह सोने के सिक्के में नहीं आती। तुम जो कर सकते हो, उसे करके दिखाना है, औरों की प्रशंसा पानी है। अपने ही बारे में डींग हाँकते रहना सद्गुण नहीं कहलाता।"

दादा की बातें रंजन को अप्रिय लगीं। उसने दादा से कहा "मैं कोई डींग नहीं हाँक रहा हूँ। जब तक मैं अपने साहस-भरे कार्यों को दूसरों से नहीं बतलाता, तब तक उन्हें मेरी श्रेष्ठता कैसे मालूम हो सकेगी?"

"तुम तो उम्र में बड़े हो गये हो, पर अक़्ल में अब भी कच्चे हो। जब तक तेरे तुम में अक़्ल नहीं आयेगी, तब तक तेरी योग्यता व श्रेष्ठता भी व्यर्थ है। अगर तुम सचमुच अक़्लमंद हो तो जंगल जाकर उस लड़की से शादी रचाकर आओगे" दादा ने उसे चुनौती देते हुए कहा। 'बोलो, वह लड़की कौन है और कहाँ है? उससे मैं शादी करके लौटूँगा और अपनी योग्यता साबित करके ही लौटूँगा।" रंजन ने कहा।

तब रंजन के दादा ने उसे सविस्तार बताया "यहाँ से दस कोसों की दूरी पर श्रीमंतनगर है। उस नगर से एक और कोस की दूरी पर एक जंगल है। वहाँ एक सुंदर लड़की रहती है। उससे शादी करने के लिए बहुत से साहसी जंगल गये। लेकिन कोई भी क़ामयाब नहीं हो सका। अगर तुमसे यह हो सका तो, उस लड़की से शादी करके यहाँ लौटो।" दादा की इन बातों से उसकी मर्दानगी तीव्र हो गयी। वह फ़ौरन

श्रीमंतनगर गया और एक धाबे में रहा ।

धाबे की मालकिन को जब मालूम हुआ कि वह जंगल की सुँदरी के लिए आया हुआ है तो कहा "बेटे, देखने में सुँदर हो, बड़े बहादूर भी लग रहे हो । क्या मैं जान सकती हूँ कि उस लड़की से क्या काम है? उसको पाने के लिए काफ़ी अक़्ल चाहिये ।"

"अक़्ल से भी साहस श्रेष्ठ है । साहसी हरहर महादेव, ब्रह्मा आदि भगवानों की सहायता की भी आशा नहीं रखता" रंजन ने कहा । दूसरे ही दिन तड़के ही रंजन जंगल चल पड़ा । जंगल बड़ा ही घना था । पग-पग पर काँटों की झाड़ियाँ थीं । पेड़ों की शाखाएँ ज़मीन से छूती हुई लटक रही थीं । वे उसके आगे बढ़ने में रुकावट बन रही थीं । तलवार हाथ में लिये, उन्हें काटते हुए वह आगे बढ़ता गया ।

इस तरह वह जब और आगे बढ़ा तो उसने देखा कि आगे एक पेड़ के नीचे पथ्थर पर एक लड़की बैठी हुई है । उसने सोचा कि दादा की बतायी स्त्री यही होगी । उसने उससे पूछा "बोलो, तुम कौन हो?"

उस स्त्री ने बताया "मुझे मालूम नहीं, तुम कौन हो? तुम्हीं इस तरफ़ आ जाओ । मैं पीछे घूम नहीं सकती ।"

उस स्त्री के बाल काफ़ी लंबे थे और चमक रहे थे । उन बालों को देखकर रंजन ने अंदाजा लगाया कि वह अवश्य ही सुँदर होगी । वह बड़ी ही उत्सुकता से आगे बढ़ा और उसे देखकर स्तब्ध रह गया । उसका शरीर एक महान शिल्पी की कल्पना के समान बहुत ही खूबसूरत था । लेकिन जहाँ मुखड़ा होना चाहिये, वहाँ शून्य ही शून्य था । उसे लगा, एक बिन्दु को उसने वेणी बाँध दी हो ।

रंजन उसे देखकर जब आश्चर्य में डूबा जा रहा था तो उस स्त्री ने कहा "वाह, मैंने कभी सुना और देखा भी नहीं कि एक मर्द इतना खूबसूरत हो सकता है । मैं नहीं जानती कि तुम जैसे खूबसूरत मर्द से शादी करने का भाग्य मुझे है या नहीं । मुझे एक मांत्रिक ने यहाँ बाँध रखा है । मुझे जो अपना बनाना चाहता है, उसे तीन साहस करने होंगे । यह साहस किसी सामान्य व्यक्ति की शक्ति के बाहर है ।"

"तीन क्या, तीस साहस करूँगा । जल्दी अपनी कहानी सुनाओ" रंजन ने कहा ।

"मैं एक राजकुमारी हूँ । मेरी सुँदरता पर लट्टू होकर बहुत-से राजकुमार मुझसे शादी करना चाहते थे । मेरे पिता को ड़र था कि उन सबको स्वयंवर पर आमंत्रित किया जाए तो कोई ख़लबली मच जाने की संभावना है । इसलिए उन्होंने एक परीक्षा रखनी चाही । यह परीक्षा कैसी हो, इसपर जब चर्चाएँ हो रहीं थीं तब किसी ने मेरे पिता को सलाह दी कि इसके बारे में जंगल में निवास करनेवाले भस्माक्ष से परामर्श किया जाए । भस्माक्ष ने जैसे ही मुझे देखा, मुझ पर रीझ गया और मेरे पिता को वहाँ से भगा दिया । उसकी मंत्र-शक्तियाँ असीम हैं । लेकिन वह मुझसे ज़बरदस्ती शादी नहीं कर सकता, क्योंकि किसी लड़की से ज़बरदस्ती शादी करने पर उसकी सारी मंत्र-शक्तियों का लोप हो जाएगा । इसीलिए उसने मुझे यहाँ बाँध रखा है । हर रोज़ किसी ना किसी समय पर यहाँ आता है और उससे शादी करने के लिए मुझसे गिड़गिड़ाता रहता है ।" युवतीं ने यों अपनी कहानी सुनायी ।

"तुम्हारे शरीर का गठन मुझे बेहोश किये जा रहा है । तुम्हारी वाणी भी अति मधुर है । मैं तुम्हारा रूप देखने की इच्छा रखता हूँ ।" रंजन ने कहा ।

"देखो, उस पेड़ की डाली पर एक दूरबीन लटक रहा है । उस पेड़ पर चढ़ना चाहो

तो क़दम-क़दम पर उन डालियों में विषसर्प हैं । ज़मीन से छलाँग मारकर उस दूरबीन को पा सकोगे तो कोई ख़तरा नहीं होगा । उससे अगर मुझे देखोगे तो मेरा मुखड़ा तुम्हें दिखायी पडेगा ।" उस युवती ने कहा ।

उसकी बातों ने रंजन में उत्साह भर दिया । वह पहले ज़मीन पर लोटता रहा और अपने शरीर को ग़रम कर लिया । फिर वह ऊपर उड़ने लगा । विचित्र बात तो यह है कि जब कभी वह ऊपर उड़ता, वह डाली और ऊपर चली जाती । जब वह नीचे खड़ा रहता, तब वह और नीची हो जाती थी ।

रंजन ने समझ लिया कि उस डाली में मंत्र की माया है । वह थोड़ी देर बैठकर उसी डाली को तीक्षणता से देखता रहा, और

फिर ज़मीन पर बैठ ही गया । यह सब उसका नाटक था । डाली उसके धोखे में आ गयी और वह नीचे आयी । जैसे ही वह नीचे आयी, रंजन बिजली के वेग से ऊपर उठा और उस दूरबीन को पकड़ लिया ।

"शाबाश बहादूर" युवती ने उसकी तारीफ़ की । दूरबीन से रंजन उसके मुखड़े को देखने लगा । उसके अद्भुत सौंदर्य पर वह मोहित हो गया और कहा "राजकुमारी, मैं तुमसे प्रेम करता हूँ । अब बताओ कि मुझे और कौन-से साहस-कार्य करने हैं?"

"जो सामने पहाड़ी गुफ़ा दिखायी दे रही है, उसमें भस्माक्ष निद्रा में रहता है । गुफ़ा का प्रहरी है, बडे-बडे दाँतवाला एक भूत । उस भूत से तुम्हें लड़ना होगा, उसे मारना होगा और उन दाँतों को पाना होगा । उन दाँतों से भोंकने पर ही मांत्रिक मरेगा ।"

रंजन तक्षण ही पहाड़ी गुफ़ा के पास पहुँचा । वहाँ सचमुच दाँतवाला भूत पहरा दे रहा था । उसके दाँत डेढ़ फुट की लंबाई और चौड़ाई के थे । रंजन को देखते ही वह चिल्ला उठा । रंजन ने अपना पूरा साहस बटोरा और उसपर तलवार चलायी ।

दाँतवाले उस भूत ने रंजन को पकड़कर ऊपर उठाया और कहा "तुम्हें इस तलवार के साथ-साथ निगल डालूँगा ।" रंजन ने बड़ी ही फुर्ती से अपनी तलवार चलायी और उसके दोनों दाँत उखाड़ दिये । भूत ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाता हुआ, ज़मीन पर गिर पड़ा और अपने हाथ-पाँव पछाड़ते हुए मर गया ।

रंजन भूत के उन दाँतों के लेकर गुफ़ा के अंदर पहुँचा । भस्माक्ष खर्राटे लेता हुआ निश्चिंत सो रहा था । रंजन ने दोनों हाथों में दोनों दाँत लिये और उन्हें उसकी छाती में भोंक दिया । वे दाँत उसके शरीर में ऐसे घुस गये मानों वे कोमल मिट्टी में घुस रहे हों । अचानक मांत्रिक के शरीर में आग लग गयी और देखते-देखते वह राख हो गया ।

रंजन की खुशी का ठिकाना नहीं रहा । वह दौड़ा-दौड़ा राजकुमारी के पास आया, और जो हुआ, सब कुछ बताया । उसने सब कुछ सुना और कहा "वाह, तुम विलक्षण वीर हो । अब तुम्हें दूसरा साहस करना

होगा । सामने जो पेड़ दिखाई दे रहे हैं उनके पीछे मगर-मच्छों का एक तालाब है । जिस प्रकार तालाब के पानी पर कमल के पत्ते छा जाते हैं, उसी प्रकार मगरों ने तालाब को ढ़क दिया है । उस तालाब के बीच में एक फूल है । उस फूल की सुगंधि अगर मुझसे सुँधवाओगे तो दूरबीन के बिना ही मेरी रूप-रेखाएँ तुम्हें स्पष्ट दिखायी पडेंगीं । मैं इन बंधनों से मुक्त हो जाऊँगी ।"

रंजन उसी दिशा में आगे बढ़ा, जहाँ मगर-मच्छों का तालाब था । मुँह फ़ाड़े हुए मगर बडे ही भयानक दीख रहे थे । तालाब के बीच में एक पुष्प अपने प्रकाश को फैलाये हुए था । उसे कैसे पाया जाय, इसी सोच में वह पड़ गया ।

बहुत खूब सोचने के बाद रंजन को एक उपाय सूझा । पास के पेड़ों की बेलों को उसने काटा और उनसे एक मज़बूत रस्सी बनायी । रस्सी के एक छोर को तालाब की इस ओर के पेड़ से कसकर बाँधा । फिर वह तालाब के किनारे-किनारे थोड़ी दूर गया और पहले जिस पेड़ से रस्सी बाँधी थी, उसी के बिल्कुल सामने के पेड़ से रस्सी का दूसरा छोर बाँध दिया ।

इसके बाद रंजन, उस रस्सी को पकड़े तालाब के बीच पहुँचा । रस्सी को अपने पैरों से कसकर पकड़े रखा और सिर के बल नीचे आया । झट से फूल को तोड़ा और फिर रस्सी पर लोटते हुए किनारे पहुँच गया । मुँह फाड़े मगर-मच्छों को उसने एक पल का भी समय नहीं दिया ।

उस फूल की सुगंधि से राजकुमारी झट पथ्थर पर से उठी । दूरबीन की सहायता के बिना ही रंजन अब राजकुमारी के अपूर्व सौंदर्य को देख पा रहा था । वह अब ख़ुशी के मारे ज़ोर से चिल्लाने लगा "वाह, मेरा प्रयत्न सफल हुआ है, मुझे जो पाना था, पा लिया । राजकुमारी, अब मैं तुमसे शादी करके अपना बनाऊँगा ।"

तब वह युवती विकट अट्टहास करती हुई बोली "अपने काबू से भी बाहर होकर क्यों आनंद में इस तरह डुबकियाँ लगा रहे हो? एक तीसरा साहस भी है, जिसे तुम्हें करना होगा । और वह तुमसे हो ही नहीं सकता । अच्छी यही है, तुम यहाँ से चले जाओ"

रंजन ने कहा "जल्दी बोलो, वह तीसरा साहस क्या है?"

"तुम्हें जो तीसरा साहस करना है,वह है मुझसे शादी" युवती ने कहा ।

""शादी करने के लिए मैंने ये साहस-कार्य किये, परंतु मेरी समझ में यह नहीं आता कि तुम से शादी करना कैसे साहस-कार्य कहा जायेगा? मुझसे शादी करने पर तुम सहमत हो गयी तो अपने को बड़ा भाग्यवान समझूँगा" रंजन ने बताया ।

"तो देख, मेरा असली रूप । मैं एक पिशाचिन हूँ ।" कहती हुई वह युवती पिशाचिन में बदल गयी । उस विकृत रूप को देखते ही रंजन का दिल दहल उठा । उस पिशाचिन ने कहा "तुम चाहो तो हमारी शादी होगी । नहीं तो इसी क्षण अपने को अपने घर में पाओगे ।"

दूसरे ही क्षण रंजन ने अपने को अपने दादा के पास पाया । उसने अपने को इस आकस्मिक घटना से संभाला और दादा से कहा "मैं तीसरा साहस कर नहीं पाया तो क्या हुआ? मैंने दो साहस जो किये, वह बडे साहस हैं । साधारण आदमी ऐसे साहस-कार्य नहीं कर सकते ।"

दादा हँसा और बोला "जब तुम यह तीसरा साहस नहीं कर पाये तो तुम्हारे किये गये दोनों साहस व्यर्थ हैं । तुम्हें मैंने उस भयानक जंगल में जाने को उकसाया तो इसका मतलब यह हुआ कि मुझे मालूम है, वहाँ तुम्हारी जान का कोई ख़तरा नहीं । अगर तुममें अक़्ल होती तो मुझसे उस युवती की पूरी कहानी जानकर वहाँ जाते, या नहीं तो उस धाबे की मालकिन से पूरा विवरण प्राप्त करते । तुम चकित मत होना कि मुझे यह सब कैसे मालूम है । मैं जब जवान था, तब ऐसे ही अनुभव से मैं भी गुज़रा । तेरा पिता अक़्लमंद है, इसीलिए उसने जंगल जाने का नाम ही नहीं लिया । तुममें मेरे गुण आ गये हैं । अब भविष्य में ही सही, होशियार रहना । बेकार के साहस-कार्यों में जीवन व्यर्थ मत करना ।"

रंजन ने सर झुकाकर अपने दादा से क्षमा-याचना की ।

निकम्मे दोस्त

एक देश में एक धनवान था। उसका एक ही बेटा था। वह जब बड़ा हुआ तो उसके पिता ने उससे कहा "बेटे, दोस्ती जीवन की सबसे बड़ी मूल्यवान संपत्ति है। धन कमाया जा सकता है, प्रसिद्धि प्राप्त की जा सकती है, पर अच्छे दोस्तों को पाना कठिनतम काम है। मेरी इच्छा है कि कैसे भी हो, तुम अच्छे दोस्तों के संगत में रहो।"

पिता की इस सलाह के बाद उसने दोस्तों को इकट्ठा करना शुरू कर दिया। बहुत ही जल्दी कितने ही जवान उसके इर्द-गिर्द घूमने लगे। वे सब उससे एक सच्चे दोस्त की तरह पेश आते थे और लगता था कि वे अपने दोस्त के लिए सब कुछ कुरवान करने को तैयार हैं।

कुछ समय बीत जाने के बाद पिता ने अपने बेटे से पूछा "क्या तुमने दोस्त पा लिये?"

"पा लिया पिताजी, अब मेरे बहुत से दोस्त हैं" बेटे ने जवाब दिया।

चकित पिता ने कहा "क्या वे सारे के सारे सचमुच ही तुम्हारे दोस्त हैं?"

बेटा पिता के इस सवाल पर थोड़ी देर सोचता रहा और बोला "उनमें से कम से कम दस दोस्त मेरे सच्चे दोस्त हैं।"

"मैं बूढ़ा हो चला हूँ। लेकिन मेरी इस लंबी उम्र में मुझे सिर्फ डेढ़ दोस्त ही मिले हैं। मुझे विश्वास नहीं होता कि इतनी -सी कम अवधि में तुमने दस दोस्तों को पा लिया है" पिता ने संदेह-भरे सुर में कहा।

बेटे ने अपने दोस्तों की बहुत ही तारीफ़ की और दावा किया कि वे उसके लिए अपनी जान भी देने तैयार हैं।

"तुम्हारा दावा सच है या नहीं? इसका फ़ैसला आसानी से हो सकता है। पर हाँ,

जी. सुचित्रा

मैं जैसा कहूँगा, वैसा तुम करो। सुनो, तुम एक सुवर को मार डालो। उसे एक बोरे में डालकर बाँध दो। उस बोरे को अपने कंधे पर डाल और अपने दोस्तों के पास जाओ। उनसे कहना, मैंने नाराज़ी में एक आदमी को मार डाला है। अगर यह बात खुल जाए तो अवश्य ही फाँसी पर चढ़ाया जाऊँगा। मुझे बचाने के प्रयत्न में जो मेरी सहायता करेगा, हो सकता है, उसे भी कड़ी से कड़ी सज़ा दी जाए। फिर इसके बाद देखना कि क्या होता है?" पिता ने कहा।

बेटे ने वैसा ही किया। उसने एक सुवर को मारा, उसे बोरे में डाल दिया और अपने कंधे पर लादे अपने हर एक दोस्त के पास गया और वही कहा, जो पिता चाहते थे। किसी ने भी उसकी मदद नहीं की। उल्टे एक दोस्त ने उससे कहा "इस परिस्थिति में मैं तुम्हारी कोई मदद नहीं कर सकता। तुमसे विनती है कि कहीं भी यह मत कहना कि इस बोरे को लेकर तुम मेरे यहाँ आये थे। तुम्हारी रक्षा तो मैं किसी भी हालत में कर नहीं पाऊँगा। लेकिन इस राज़ के खुल जाने से मैं भी फँस जाऊँगा।"

दूसरे दोस्त ने कहा "तुम्हारे लिए मैं कुरबानी देने तैयार हूँ। लेकिन मेरी कुरबानी बेकार जायेगी। मेरी सहायता से कोई फ़ायदा नहीं होगा।"

"जब तुम्हारी फाँसी हो जायेगी तब तुम्हारी लाश की अंतिम क्रियाएँ बड़े ही वैभव से करूँगा। इतने बड़े पैमाने पर करूँगा कि लोग दंग रह जाएँगे।" एक और दोस्त ने उससे कहा।.

अपने इन दोस्तों की बातों पर वह बहुत ही निराश हुआ । बहुत ही चिंतित होते हुए अपने पिता के पास आया और वे सारी बातें सुनायीं, जो उसके दोस्तों ने कही थी ।

पूरा सुनने के बाद अपना सिर हिलाते हुए पिता ने कहा "मैं जानता था कि वे ऐसा ही करेंगे । तुम्हें याद है, मैंने कहा था कि मेरे जीवन में मेरे डेढ़ ही दोस्त हैं । अब हम यह भी देख लेंगे कि वे किस प्रकार मेरी सहायता कर पायेंगे । समझ लो, यह भी एक परीक्षा है ।"

पिता की सलाह के मुताबिक बेटे ने बोरे को फिर से अपने कंधे पर डाला और पिता के आधे दोस्त के पास गया । उससे भी वही बताया, जो उसने अपने दोस्तों से बताया था । उस दोस्त ने उसकी पूरी बात सुनी और फिर कहा "मैं तो तुम्हें नहीं जानता । लेकिन तुम्हारे पिता मेरे अच्छे दोस्त हैं । उनके लिए मैं तुम्हारी मदद करूँगा ।"

इसके बाद उस दोस्त ने उस बोरे को रात के अंधेरे में पिछवाड़े की ज़मीन में गाड़ दिया और मिट्टी से ढ़क दिया । फिर कहा "अब ड़रने की कोई बात नहीं । निश्चिंत होकर जाओ ।"

बेटे ने पूरी बात अपने पिता से बतायी । तब पिता ने एक नौकर को चौकीदार के पास भेजा । उस नौकर ने चौकीदार से कहा "साहब, हमारे मालिक के बेटे ने एक आदमी को मारा है और लाश को बोरे में बाँधकर फ़लाने महाशय के पास ले गया है । उस महाशय ने किसी की जानकारी के बिना अपने पिछवाड़े में गाड़ दिया है

और मेरे मालिक के बेटे को बचाने की कोशिश की है ।"

चौकीदार ने तुरंत आदमियों को भेजा और गड्ढा खुदवाया तो उसमें बोरा बरामद हुआ ।

धनी के आधे दोस्त ने चौकीदार से कहा "साहब, यह तो सच है कि यह जवान एक बार मेरे घर आया था और मुझे अपना परिचय देते हुए कहा मैं आपके दोस्त का बेटा हूँ । उसके पहले या बाद मैंने इस जवान को नहीं देखा है । मेरी जानकारी के बिना इसने मेरे पिछावाड़े में गाड़ दिया होगा । इस बात से मैं बिलकुल अनभिज्ञ हूँ ।"

इस बीच धनी का बेटा अपने पिता के दूसरे दोस्त के पास गया और बोला "महाशय, मैंने आवेश में एक आदमी का क़त्ल कर दिया है । मेरे पिता के एक दोस्त ने वह लाश अपने पिछवाड़े में गाड़कर मेरी हिफ़ाज़त की है । लेकिन अब यह बात खुल गयी है । लगता है, मेरी अवश्य फाँसी हो जायेगी ।"

उसकी बात सुनते ही धनी का दोस्त तुरंत चौकीदार के पास गया और बोला "सुना है कि आपने फ़लाने जवान पर क़त्ल का इलज़ाम लगाया है । उसने सचमुच यह क़त्ल नहीं किया है । क़त्ल तो मेरे बेटे ने किया है । यह कोई एक क़त्ल करे और दूसरा उसके लिए दोषी ठहराया जाए, यह बिलकुल अनुचित है । इसलिए ना चाहते हुए भी मुझे यह सच कहना पड़ रहा है । निर्दोष उस जवान को छोड़ दीजिये और दोषी मेरे बेटे को फाँसी की सज़ा दीजिये ।"

जब यह बात मालूम हुई तो धनी आदमी ने अपने बेटे से कहा "देखा, सच्चा दोस्त कैसा होता है? विश्वास ना कर बैठना कि हर कोई मेरा दोस्त ही है ।" और फिर वह वहाँ से निकल पड़ा । वह चौकीदार के पास गया और पूरी बात सुनायी । कहा "इस बोरे में जो है, वह कोई आदमी नहीं बल्कि मरा हुआ सुवर है । आप इस बोरे को खोलिये और खुद देख लीजिये ।" चौकीदार ने बोरा खोला और देखा कि उसमें मरा हुआ सुवर ही है । उसे ताज्जुब हुआ ।

गोरिल्ला

मनुष्य की तरह गोरिल्ले भी सीधे चल सकते हैं। लेकिन उनकी रीढ़ मनुष्य की रीढ़ के समान नहीं झुकती। वह एकदम सीधी होती है। इसलिए जल्दी ही थककर वे पैरों पर झुक जाते हैं। चिंपांजी, गिब्बन, उरांगउटनि की तरह देखने में ऐसे बंदर लगते है, जिनकी पूँछ नहीं होती। मनुष्य की ही तरह इनके ३२ दांत होते हैं। पर हाँ, बगल के दांत चौड़े और पैनीदार होते हैं। इनके हाथ की पाँचों उँगलियाँ मनुष्य की उँगलियों की ही तरह होती हैं। पर पाँव भी हाथ की ही तरह होते हैं। जैसे हाथ से पकड़ पाते हैं वैसे ही पैरों से भी गोरिल्ला पेड़ों की टहनियों को भी पकड़ पाते हैं, खड़े होकर पेड़ों के पत्तों की टहनियों को हवा में ये उड़ाते हैं और ऐसा करके दुश्मनों को डराते हैं, खासकर शिकारियों को। ये सामना करके लड़ते नहीं। अपनी बलवान छाती को ये मनुष्य की तरह पीटते हुए रोदन करते रहते हैं।

यह पेड़ नहीं: घास है।

जानते हो, काफ़ी लंबाई तक बढ़नेवाली घास कौन-सी है। बाँस। कुछ बाँसें ३५-३६ मीटर तक की ऊँचाई तक बढ़ती हैं। यही नहीं; बड़े वेग से भी ये बढ़ती हैं। चौबीस घंटों में ९० सें. मी तक की ऊँचाई तक बढ़ती हैं। ऊँचाई, रंग और आकार को देखने से ऐसा प्रतीत होता है कि बाँसों में हज़ार से भी अधिक जातियाँ हैं। कुछ जातियों की बाँसें ६०,१००,१२० सालों में एक ही बार खिलती हैं। परंतु एक जाति के पौधे जहाँ कहीं भी हों, एकसाथ खिलते हैं। भारत, जापान और चीन में बाँसें पर्याप्त मात्रा में हैं।

अंकुड़े पाँव

हम ज़्यादातार देखते रहते हैं कि हमारे घरों में छिपकलियाँ दीवारों पर, छत के नीचे उल्टी जाती रहती हैं। छत के नीचे उल्टी चलती हुई भी नीचे नहीं गिरतीं। उनको देखकर हमें आश्चर्य होता है कि यह कैसे संभव है? छिपकलियाँ जब काँच की खिड़कियों से जाने लगती हैं तब दूसरी तरफ़ जाकर देखने से उनके पाँव दिखाई पड़ते हैं। पैरों के निचले भाग में चमड़े की थैली होती हैं। उसके चारों तरफ़ असंख्य छोटी-छोटी अंकुड़ियाँ होती हैं। वे पीछे की तरफ़ मुड़ी हुई होती हैं। चाहे कितना भी स्निग्ध प्रदेश हो, छिपकलियाँ आसानी से उसे पकड़ लेते हैं। पकड़ने में ये अंकुडियाँ भी उसके उपयोग में आती हैं। छिपकलियाँ एक-एक पाँव जब उठाती हैं तब उसके पैर के नीचे की चमड़े की थैलियाँ संकीर्ण हो जाती हैं और फिर फैलती रहती हैं।
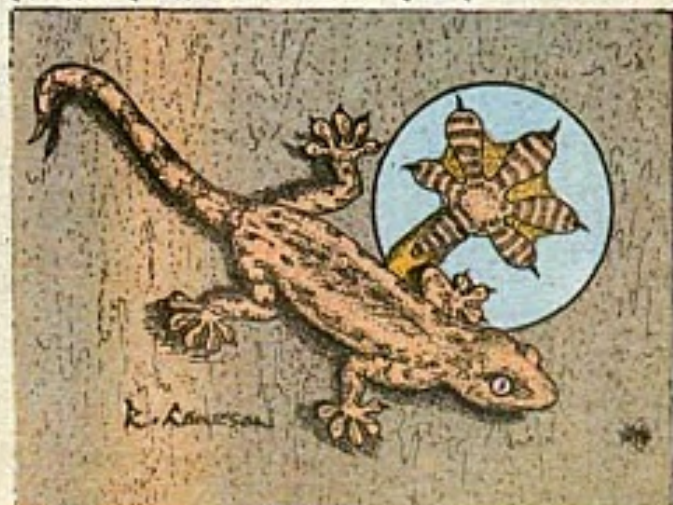
Say "Hello" to text books and friends
'Cause School days are here again
Have a great year and all the best
From Wobbit, Coon and the rest!

SUPER
RUBBER
It's time to go back to school again. Time for text
books. Time for games. Time to meet old friends.
And make new ones. Time to start studying
again. Because there's so much to learn about
the world around you.
From all of us here at Chandamama, have a
great year in school. And remember to tell us
what you've learnt everyday, when you
come home from school !
THE
CHANDAMAMA
COLLECTION
RTIG1246

फोटो परिचयोक्ति प्रतियोगिता :: पुरस्कार १००)

पुरस्कृत परिचयोक्तियां नवम्बर, १९९३ के अंक में प्रकाशित की जाएँगी ।

D.N. Prasad

Devidas Kasbekar

* उपर्युक्त फोटो की सही परिचयोक्तियाँ एक शब्द या छोटे वाक्य में हों । * १० सितम्बर'९३ तक परिचयोक्तियां प्राप्त होनी चाहिए । * अत्युत्तम परिचयोक्ति को (दोनों परिचयोक्तियाँ को मिलाकर) रु. १००-/ का पुरस्कार दिया जाएगा । * दोनों परिचयोक्तियाँ केवल कार्ड पर लिखकर इस पते पर भेजें : चन्दामामा फोटो परिचयोक्ति प्रतियोगिता, मद्रास-२६.

जुलाई १९९३, की प्रतियोगिता के परिणाम

पहला फोटो : मेहनत में लगन!

दूसरा फोटो : प्यार में मगन!!

प्रेषक : बेबी खुशबू, D/o R.K. Patel

MANIKPUR—P.O. Via Saria, Dt-Raygarh M.P.

पुरस्कार की राशि रु. १००/- इस महीने के अंत में भेजी जाएगी ।

Printed by B.V. REDDI at Prasad Process Private Ltd., 188 N.S.K. Salai, Madras 600 026 (India) and Published by B. VISWANATHA REDDI on behalf of CHANDAMAMA PUBLICATIONS, Chandamama Buildings, Vadapalani, Madras 600 026 (India). Controlling Editor: NAGI REDDI.

Bakeman's
YOU'LL
DROP
Everything for BAKEMAN'S
MILK DROPS
Bakeman's MILK DROPS COCONUT
Bakeman's MILK DROPS CHOCOLATE
Bakeman's MILK DROPS VANILLA

मिठाई में
नारियल
मुँह में
हलचल
nutrine
COOKIES
बच्चे झूमें-गायें, मौज मनायें
कोकानाका कुकीज
THE FINEST, WIDEST RANGE
sh/NC/9090/Hin